RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 236
दि. 27.12.2025,
शनिवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nakaram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.
Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

देश के 20 नौनिहाल बने प्रेरणा, प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित

पीएम मोदी बोले– जेन Z और जेन अल्फा ही विकसित भारत की नींव

(जीएनएस)। नई दिल्ली। वीर बाल दिवस के पावन अवसर पर देश के भविष्य कहे जाने वाले 20 नौनिहालों को उनके असाधारण साहस, प्रतिभा और समर्पण के लिए 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित गरिमामय समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने इन बच्चों को सम्मान प्रदान किया। इस मौके पर राष्ट्रपति ने कहा कि इन बाल प्रतिभाओं ने न केवल अपने परिवार और समाज बल्कि पूरे देश को गौरवान्वित किया है और इनसे प्रेरणा लेकर देश के अन्य बच्चे भी आगे बढ़ेंगे।

समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि जेन Z और जेन अल्फा ही भारत को विकसित राष्ट्र के लक्ष्य तक पहुंचाएंगे। उन्होंने कहा कि आज जिन बच्चों को सम्मान मिला है, वे इस बात का प्रमाण हैं कि भारत की आने वाली पीढ़ी में साहस, नवाचार, करुणा और प्रतिभा की कोई कमी नहीं है। प्रधानमंत्री ने बच्चों के आत्मविश्वास और सोच की सराहना करते हुए कहा कि यही पीढ़ी भारत को विज्ञान, खेल, संस्कृति, तकनीक और सामाजिक सरोकारों में नई ऊंचाइयों तक ले जाएगी।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने वीर बाल दिवस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि लगभग 300 वर्ष पहले गुरु गोबिन्द सिंह के चार साहिबजादों ने सत्य और न्याय के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया था। उन्हीं की स्मृति में 26 दिसंबर को वीर बाल दिवस मनाया जाता है, ताकि देश की नई पीढ़ी को साहस, त्याग और धर्म की रक्षा के मूल्यों से जोड़ा जा सके। उन्होंने कहा कि आज जिन बच्चों को सम्मान मिला है, वे उसी वीर परंपरा के आधुनिक प्रतीक हैं।

इस अवसर पर दो बच्चों को मरणोपरांत राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। बिहार के कैमूर जिले के 11 वर्षीय कमलेश ने दुर्गावती नदी में बह रहे एक बच्चे को बचाने के प्रयास में अपनी जान गंवा दी थी। तमिलनाडु की आठ वर्षीय व्योमा प्रिया ने पार्क में खेलते समय करंट की चपेट में आए एक बच्चे को बचाने की कोशिश में

प्राण न्योछावर कर दिए। दोनों बच्चों के परिजनों ने मंच पर पहुंचकर पुरस्कार ग्रहण किया, जिससे पूरा सभागार भावुक हो उठा। वहीं पंजाब के फिरोजपुर निवासी 10 वर्षीय श्रवण सिंह को 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान सैनिकों की निस्वार्थ सेवा के लिए सम्मानित किया गया। श्रवण ने अभियान के समय जवानों के लिए दूध, चाय, छाछ और बर्फ की व्यवस्था कर सेवा भावना की मिसाल पेश की थी।

खेल के क्षेत्र में सम्मानित बच्चों की कहानियां भी संघर्ष और सफलता की मिसाल हैं। बिहार के 14 वर्षीय वैभव सूर्यवंशी ने बेहद कम उम्र में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विस्फोटक बल्लेबाज के रूप में पहचान बनाई है। गुजरात की सात वर्षीय वाका लक्ष्मी प्रज्ञिका ने 2025 में फिडे वर्ल्ड स्कूल चेस चैंपियनशिप में अंडर-7 बालिका वर्ग में सभी नौ मुकाबले जीतकर विश्व चैंपियन बनने का गौरव हासिल किया। झारखंड की 14 वर्षीय फुटबॉलर अनुष्का ने कठिन पारिवारिक परिस्थितियों के बावजूद अंडर-17 महिला फुटबॉल टीम में जगह बनाई। छत्तीसगढ़ की योगिता मंडावी, जिन्होंने कम उम्र में माता-पिता को खो दिया, आज जूडो की राष्ट्रीय स्तर की खिलाड़ी हैं और कई पदक जीत चुकी हैं। ओडिशा की जोशना साबर ने एशियाई यूथ वेटलिफ्टिंग चैंपियनशिप में तीन स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रचा। तेलंगाना के 16 वर्षीय विश्वनाथ कार्तिकेय पदकांति ने दुनिया के सात महाद्वीपों की सबसे ऊंची चोटियों पर चढ़ाई कर सबसे कम उम्र के भारतीय पर्वतारोही बनने का रिकॉर्ड बनाया। आंध्र प्रदेश की शिवानी होसरु उप्परा, हरियाणा की पैरा एथलीट ज्योति और कर्नाटक की तैराक धीनिधि देसिंघु ने भी अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर देश का नाम रोशन किया।

साहस के क्षेत्र में उत्तर प्रदेश के नौ वर्षीय अजय राज और केरल के 11 वर्षीय मोहम्मद सिदान को सम्मानित किया गया। अजय राज ने मगरमच्छ के जबड़े से अपने पिता की जान बचाकर अद्भुत साहस दिखाया, जबकि सिदान ने करंट की चपेट में आए अपने दोस्तों को सूझबूझ से बचाया। विज्ञान और तकनीक में महाराष्ट्र के 17 वर्षीय अर्णव महर्षि को एआई आधारित सॉफ्टवेयर ऐप विकसित करने के लिए पुरस्कार मिला, जिसे भारत सरकार की ओर से कॉपीराइट और पेटेंट भी प्राप्त है।

कला और संस्कृति के क्षेत्र में मिजोरम की नौ वर्षीय एस्तेर लालदुहावमी हनामते को यूट्यूब पर असाधारण लोकप्रियता और संगीत प्रतिभा के लिए सम्मानित किया गया। पश्चिम बंगाल के 16 वर्षीय सुमन सरकार को तबला वादन में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 43 पुरस्कार जीतने के लिए चुना गया। पर्यावरण संरक्षण में उत्तर प्रदेश की पूजा और असम की आयशी प्रीशा बोरा ने नवाचार के जरिए प्रदूषण नियंत्रण और संसाधनों के पुनर्चक्रण की मिसाल पेश की। सामाजिक सेवा के क्षेत्र में चंडीगढ़ के 17 वर्षीय वंश को उनके योगदान के लिए सम्मान मिला।

समारोह के अंत में राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री दोनों ने कहा कि ये 20 बच्चे भारत के उज्ज्वल भविष्य का प्रतीक हैं। इनकी कहानियां यह साबित करती हैं कि भारत की नई पीढ़ी सिर्फ सपने नहीं देख रही, बल्कि उन्हें साकार करने का साहस और सामर्थ्य भी रखती है।

चार दशकों की वाम सत्ता का किला ढहा, तिरुवनंतपुरम में पहली बार भाजपा का मेयर बना इतिहास

(जीएनएस)। केरल की राजनीति में शुक्रवार का दिन ऐतिहासिक साबित हुआ, जब तिरुवनंतपुरम नगर निगम में भारतीय जनता पार्टी ने पहली बार मेयर पद पर कब्जा कर लिया। करीब 40 से 45 वर्षों से वाम लोकतांत्रिक मोर्चा के प्रभुत्व वाले इस निगम में भाजपा के वी. वी. राजेश की जीत ने न सिर्फ सत्ता समीकरण बदले, बल्कि केरल की पारंपरिक राजनीतिक धाराओं को भी नई दिशा दे दी। इस परिणाम को राज्य की शहरी राजनीति में एक बड़े बदलाव और भविष्य के संकेत के तौर पर देखा जा रहा है। तिरुवनंतपुरम नगर निगम में शुक्रवार को हुए मेयर चुनाव में कुल 101 पार्षदों ने मतदान किया। भाजपा उम्मीदवार वी. वी. राजेश को 51 वोट मिले, जिनमें एक निर्दलीय पार्षद का समर्थन भी शामिल रहा। वाम लोकतांत्रिक मोर्चा के प्रत्याशी पी. शिवाजी को 29 वोट प्राप्त हुए, जबकि कांग्रेस गठबंधन के उम्मीदवार के. एस. सबरिनाथन को 19 वोट मिले, जिनमें से दो मत बाद में अमान्य घोषित कर दिए

गए। स्पष्ट बहुमत के साथ भाजपा की जीत ने यह साफ कर दिया कि नगर निगम की राजनीति में अब एक नया अध्याय शुरू हो चुका है।

इस ऐतिहासिक जीत की बुनियाद 9 दिसंबर को घोषित हुए नगर निगम चुनाव परिणामों में ही पड़ गई थी। 101 वार्डों वाले तिरुवनंतपुरम नगर निगम में भाजपा ने 50 वार्डों पर जीत दर्ज कर सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरकर सभी को चौंका दिया था। इसके मुकाबले वाम लोकतांत्रिक मोर्चा को 29 और कांग्रेस गठबंधन को 19 वार्डों पर संतोष करना पड़ा था। गौर करने वाली बात यह है कि यह वही नगर निगम है, जहां पिछले लगभग 45 वर्षों से वाम मोर्चा का दबदबा बना हुआ था। ऐसे में भाजपा का सबसे बड़ी पार्टी बनना और अब मेयर पद हासिल करना केरल की राजनीति में एक बड़े बदलाव का संकेत माना जा रहा है।

तिरुवनंतपुरम न केवल राज्य की राजधानी है, बल्कि यह कांग्रेस सांसद शशि थरूर का संसदीय क्षेत्र भी है। ऐसे में इस नगर निगम में भाजपा की जीत को प्रतीकात्मक से कहीं अधिक महत्वपूर्ण माना जा रहा है। राजनीतिक जानकारों का मानना है कि यह परिणाम यह दर्शाता है कि शहरी मतदाता अब पारंपरिक दलों से इतर विकल्पों पर भी भरोसा जता रहे हैं और स्थानीय मुद्दों को प्राथमिकता दे रहे हैं।

केरल में स्थानीय निकाय चुनाव दो चरणों में 9 और 11 दिसंबर को कराए गए थे, जिनमें राज्य के कुल 1,199 स्थानीय निकायों के लिए मतदान हुआ। इनमें छह नगर निगम, 86 नगर पालिकाएं, 14 जिला पंचायतें, 152 ब्लॉक पंचायतें और 941 ग्राम पंचायतें शामिल थीं। इन चुनावों के नतीजों ने साफ कर दिया कि राज्य की राजनीति में मतदाता व्यवहार धीरे-धीरे बदल रहा है और मुकाबला पहले से कहीं अधिक दिलचस्प होता जा रहा है।

हालांकि राज्य के छह नगर निगमों में से भाजपा को केवल तिरुवनंतपुरम में ही मेयर पद हासिल हुआ, जबकि कांग्रेस गठबंधन ने चार और वाम मोर्चा ने एक निगम में जीत दर्ज की। इसके बावजूद तिरुवनंतपुरम में भाजपा की यह जीत राजनीतिक रूप से सबसे ज्यादा चर्चा में है, क्योंकि यह वामपंथ के गढ़ में सेंध लगाने जैसा माना जा रहा है। कोल्लम, कोच्चि, त्रिशूर और कन्नूर जैसे नगर निगमों में कांग्रेस गठबंधन ने अपनी पकड़ बनाए रखी, जबकि कोझिकोड में वाम मोर्चा मजबूत स्थिति में रहा।

निर्वासन के बाद भी पाकिस्तान में दो करोड़ से अधिक नहीं बल्कि 20 लाख से ज्यादा अफगान शरणार्थी अब भी मौजूद

(जीएनएस)। इस्लामाबाद। पाकिस्तान से बड़े पैमाने पर अफगान नागरिकों के निर्वासन के बावजूद देश में शरणार्थियों की संख्या अब भी बेहद बड़ी बनी हुई है। पाकिस्तानी मीडिया में संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी एजेंसी (यूएनएचसीआर) के हवाले से प्रकाशित रिपोर्टों के अनुसार, अब भी पाकिस्तान में 20 लाख से अधिक अफगान शरणार्थी रह रहे हैं। यह आंकड़ा ऐसे समय सामने आया है, जब अब तक 10 लाख से ज्यादा अफगान नागरिकों को पाकिस्तान से वापस अफगानिस्तान भेजा जा चुका है। यूएनएचसीआर के मुताबिक, नवंबर महीने में अफगान नागरिकों के स्वदेश लौटने की प्रक्रिया में तेज़ी देखी गई। केवल नवंबर में ही कुल 1.71 लाख अफगान नागरिक पाकिस्तान से अफगानिस्तान लौटे। इनमें से 37,899 लोगों को चमन, तोरखम और बाराबचा जैसे प्रमुख सीमा बिंदुओं के माध्यम से औपचारिक रूप से निर्वासित किया गया। इसके अलावा बड़ी संख्या में लोग स्वेच्छा से भी अपने देश लौटते देखे गए, हालांकि कई मामलों में यह 'स्वैच्छिक' वापसी दबाव और अनिश्चित परिस्थितियों के बीच हुई मानी जा रही है। यूएनएचसीआर ने यह भी बताया कि नवंबर के दौरान उसके प्रत्यावर्तन केंद्रों के जरिए 31,500 से अधिक प्रूफ ऑफ रजिस्ट्रेशन यानी पीओआर कार्डधारक अफगान नागरिकों को अफगानिस्तान भेजा गया। ये वे शरणार्थी हैं, जिन्हें पहले पाकिस्तान में अस्थायी कानूनी दर्जा प्राप्त था। लेकिन हाल के महीनों में पाकिस्तान सरकार की सख्त नीति के चलते इन पर भी स्वदेश लौटने का दबाव बढ़ा है।

इसी बीच पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच सीमा पर बढ़े तनाव ने मानवीय राहत कार्यों को भी गंभीर रूप से प्रभावित किया है। सीमा क्षेत्रों में आवाजाही पर कई बार प्रतिबंध लगाए गए, जिससे राहत सामग्री की आपूर्ति और शरणार्थियों की सहायता से जुड़े अभियानों में बाधाएं आईं। यूएनएचसीआर के अनुसार, सुरक्षा हालात बिगड़ने के कारण संयुक्त राष्ट्र की कई एजेंसियों को चमन सीमा क्षेत्र से अस्थायी रूप से हटना पड़ा, जिससे वहां मौजूद शरणार्थियों के लिए हालात और कठिन हो गए। पाकिस्तान सरकार ने इस पूरी प्रक्रिया के तहत एक और बड़ा फैसला लेते हुए खैबर पख्तूनख्वा, बलूचिस्तान और पंजाब प्रांतों में स्थित सभी 54 अफगान शरणार्थी गांवों की आधिकारिक मान्यता भी रद्द कर दी है। इसके साथ ही अफगान नागरिकों से लगातार अपील की जा रही है कि वे स्वदेश लौट जाएं। सरकार का तर्क है कि पाकिस्तान अब लंबे समय तक इतनी बड़ी संख्या में शरणार्थियों का बोझ उठाने की स्थिति में नहीं है।

हालांकि, यूएनएचसीआर ने पाकिस्तान सरकार से मानवीय दृष्टिकोण अपनाने की अपील की है। विशेष रूप से एजेंसी ने यह मांग उठाई है कि पाकिस्तान के विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों में पढ़ रहे अफगान छात्रों को विशेष छूट दी जाए, ताकि उनकी पढ़ाई अधूरी न छूटे। यूएनएचसीआर का कहना है कि शिक्षा जैसे संवेदनशील मामलों में कठोर कदम न उठाकर मानवीय मूल्यों का सम्मान किया जाना चाहिए।

कुल मिलाकर, अफगान शरणार्थियों का मुद्दा पाकिस्तान के लिए न केवल एक सुरक्षा और प्रशासनिक चुनौती बना हुआ है, बल्कि यह एक गंभीर मानवीय संकट का रूप भी लेता जा रहा है। बड़े पैमाने पर निर्वासन के बावजूद लाखों अफगान नागरिकों की मौजूदगी और सीमा तनाव के बीच राहत कार्यों में आ रही बाधाएं इस संकट को और जटिल बना रही हैं। आने वाले समय में यह देखना अहम होगा कि पाकिस्तान सरकार और अंतरराष्ट्रीय एजेंसियां मिलकर इस समस्या का कोई संतुलित और मानवीय समाधान निकाल पाती हैं या नहीं।

भारत में बच्चों के लिए सोशल मीडिया पर रोक लगे: मद्रास हाईकोर्ट का केंद्र को सुझाव

(जीएनएस)। चेन्नई। बच्चों को इंटरनेट पर आसानी से उपलब्ध हो रहे अश्लील और पोर्नोग्राफिक कंटेंट को लेकर मद्रास हाईकोर्ट ने गंभीर चिंता जताते हुए केंद्र सरकार को अहम सुझाव दिया है। अदालत ने कहा है कि ऑस्ट्रेलिया की तर्ज पर भारत में भी 16 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए सोशल मीडिया के इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगाने पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए। मदुरै बेंच की डिविजन बेंच, जिसमें जस्टिस जी. जयचंद्रन और जस्टिस के. के. रामकृष्णन शामिल थे, ने यह टिप्पणी नाबालिगों को ऑनलाइन अश्लील सामग्री तक आसान पहुंच के मुद्दे पर दायर एक जनहित याचिका की सुनवाई के दौरान की।

कोर्ट ने कहा कि आज के डिजिटल दौर में बच्चे बिना किसी रोक-टोक के ऐसे कंटेंट तक पहुंच बना पा रहे हैं, जो उनके मानसिक, सामाजिक और नैतिक विकास के लिए बेहद नुकसानदेह है। न्यायालय ने इस बात पर जोर दिया कि सिर्फ कानूनी प्रावधान ही नहीं, बल्कि तकनीकी और सामाजिक स्तर पर भी सख्त कदम उठाने की जरूरत है। अदालत ने इंटरनेट सर्विस प्रोवाइडर्स पर और कड़े नियम लागू करने का सुझाव देते हुए कहा कि उन्हें अनिवार्य रूप से पैरेंटल कंट्रोल या पैरेंटल विंडो जैसी सुविधाएं देनी चाहिए, ताकि माता-पिता अपने बच्चों की ऑनलाइन गतिविधियों पर नजर रख सकें और हानिकारक कंटेंट को फिल्टर कर सकें। यह मामला एक पुरानी जनहित याचिका से जुड़ा है, जिसे एस. विजयकुमार ने दायर किया था। याचिका में कहा गया था कि इंटरनेट पर बच्चों को अश्लील सामग्री बहुत आसानी से मिल जाती है और इसे रोकने के लिए कोई प्रभावी व्यवस्था मौजूद नहीं है। याचिकाकर्ता की ओर से पेश वकील पी. एस. पलानीवेल राजन ने सुनवाई के दौरान ऑस्ट्रेलिया के नए कानून का हवाला देते हुए बताया कि वहां बच्चों को सोशल मीडिया के दुष्प्रभावों से बचाने के लिए सख्त कानून बनाया गया है। याचिका में यह भी मांग की गई थी कि राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग, तमिलनाडु बाल अधिकार आयोग और इंटरनेट सर्विस प्रोवाइडर्स को निर्देश दिए जाएं कि वे पैरेंटल कंट्रोल सिस्टम लागू करें और स्कूलों तथा समाज में बड़े पैमाने पर जागरूकता अभियान चलाएं। सुनवाई के दौरान कोर्ट ने माना कि बच्चों की सुरक्षा केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि इसमें माता-पिता, स्कूलों, इंटरनेट कंपनियों और समाज की सामूहिक भूमिका बेहद अहम है। अदालत ने कहा कि अगर समय रहते ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो इसके दूरगामी और गंभीर परिणाम हो सकते हैं।

गौरतलब है कि ऑस्ट्रेलिया सरकार ने नवंबर 2024 में 'ऑनलाइन सेफ्टी अमेंडमेंट बिल' पास किया था। इस कानून के तहत 16 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए टिकटॉक, एक्स (पूर्व में ट्विटर), फेसबुक, इंस्टाग्राम, स्नैपचैट और यूट्यूब जैसे बड़े सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के इस्तेमाल पर रोक लगाने का प्रावधान किया गया है। इन कंपनियों पर यह जिम्मेदारी डाली गई है कि वे नाबालिगों के अकाउंट हटाएं और उम्र की सख्त जांच व्यवस्था लागू करें। हालांकि, इस कानून को लेकर वहां अभिव्यक्ति की आजादी और डिजिटल अधिकारों पर बहस भी जारी है। मद्रास हाईकोर्ट की यह टिप्पणी ऐसे समय में आई है, जब भारत में बच्चों और किशोरों में सोशल मीडिया की बढ़ती लत, साइबर बुलिंग और ऑनलाइन अश्लीलता को लेकर चिंताएं लगातार बढ़ती जा रही हैं। अदालत का मानना है कि यदि ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों के अनुभवों से सीख लेकर संतुलित और प्रभावी नीति बनाई जाए, तो भारत में भी बच्चों को डिजिटल दुनिया के खतरों से बेहतर ढंग से सुरक्षित किया जा सकता है।

त्रिपुरा विधानसभा अध्यक्ष विश्व बंधु सेन का निधन, राज्य ने खोया अनुभवी जननेता

(जीएनएस)। बेंगलुरु। त्रिपुरा विधानसभा के अध्यक्ष विश्व बंधु सेन का शुक्रवार को बेंगलुरु के एक निजी अस्पताल में निधन हो गया। अधिकारियों के अनुसार 72 वर्षीय सेन को गंभीर मस्तिष्काघात यानी

सेरेब्रल स्ट्रोक हुआ था, जिसके बाद से वह उपचाराधीन थे। लंबे समय से राजनीति और जनसेवा में सक्रिय रहे सेन के निधन से त्रिपुरा की राजनीति में शोक की लहर दौड़ गई है। उनके परिवार में पत्नी, एक पुत्र और एक पुत्री हैं। अधिकारियों ने बताया कि उनका पार्थिव शरीर शनिवार को त्रिपुरा लाया जाएगा, जहां अंतिम दर्शन और अंतिम संस्कार की प्रक्रिया संपन्न होगी। विश्व बंधु सेन उत्तरी त्रिपुरा जिले के धर्मनगर विधानसभा क्षेत्र से विधायक थे और एक सरल, मिलनसार तथा जनसमर्पित नेता के रूप में पहचाने जाते थे। विधानसभा अध्यक्ष के रूप में उन्होंने सदन की कार्यवाही को मर्यादा और निष्पक्षता के साथ संचालित किया और संसदीय परंपराओं को सुदृढ़ करने में अहम भूमिका निभाई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। एक्स पर जारी अपने संदेश में प्रधानमंत्री ने कहा कि त्रिपुरा विधानसभा के अध्यक्ष विश्व बंधु सेन के निधन से उन्हें अत्यंत दुख हुआ है। उन्होंने कहा कि त्रिपुरा की प्रगति में सेन के योगदान और समाज सेवा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को हमेशा याद रखा जाएगा। प्रधानमंत्री ने दुख की इस घड़ी में उनके परिवार और समर्थकों के प्रति संवेदना प्रकट की। त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक साहा ने भी सेन के निधन पर शोक जताते हुए कहा कि राज्य ने एक अनुभवी और समर्पित जननेता को खो दिया है। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने भी अपने शोक संदेश में कहा कि विश्व बंधु सेन के असामयिक निधन से गहरा आघात पहुंचा है और उन्हें जनता की निस्वार्थ सेवा के लिए याद किया जाएगा।

विश्व बंधु सेन का राजनीतिक जीवन लगभग पांच दशकों तक फैला रहा। उन्होंने 1970 के दशक में कांग्रेस कार्यकर्ता के रूप में अपने राजनीतिक करियर की शुरुआत की थी। जनसंपर्क और संगठनात्मक क्षमता के बल पर उन्होंने धीरे-धीरे अपनी पहचान बनाई। वर्ष 2008 और 2013 में वह कांग्रेस के टिकट पर विधायक चुने गए। वर्ष 2017 में उन्होंने भारतीय जनता पार्टी का दामन थामा और 2018 तथा 2023 में धर्मनगर विधानसभा क्षेत्र से भाजपा के उम्मीदवार के रूप में चुनाव जीतकर विधानसभा पहुंचे। वर्ष 2018 में वह त्रिपुरा विधानसभा के उपाध्यक्ष बने और 2023 में भाजपा के लगातार दूसरी बार सत्ता में आने के बाद उन्हें विधानसभा अध्यक्ष की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई।

राजनीतिक दल बदलने के बावजूद विश्व बंधु सेन की पहचान एक ऐसे नेता की रही, जो विचारधाराओं से ऊपर उठकर क्षेत्र के विकास और जनता की समस्याओं के समाधान के लिए कार्य करते रहे। उनके निधन से न केवल त्रिपुरा विधानसभा बल्कि राज्य की राजनीतिक और सामाजिक जीवन में एक बड़ा शून्य पैदा हो गया है। राज्यभर से राजनीतिक नेताओं, सामाजिक संगठनों और आम नागरिकों की ओर से उन्हें श्रद्धांजलि दी जा रही है।

संपादकीय

सरसों का संकट

एक समय था जब पंजाब के ग्रामीण अंचलों में खिले हुए सरसों के खेत मौसमी बयार में बदलाव के प्रतीक हुआ करते थे। तमाम सांस्कृतिक प्रतिमानों में पीले सरसों के खेतों को मौसम के गौरव के रूप में चित्रित किया जाता रहा है। लेकिन वक्त की विडंबना है कि यह अब यह सुनहरी फसल सिमटती नजर आ रही है। जिसके परिणाम स्वरूप आज देश में हम खाद्य तेलों की पर्याप्त आपूर्ति नहीं कर पा रहे हैं। यही वजह है कि भारत लगातार आयातित खाद्य तेलों पर अत्यधिक निर्भर होता जा रहा है। निश्चय ही यह स्थिति व्यवस्था के कई विरोधाभासों को भी उजागर कर रही है। यह तथ्य चौंकाता है कि पंजाब में सरसों के उत्पादन में इसलिए गिरावट नहीं आ रही है कि फसल उत्पादन क्षमता में किसी तरह की कोई कमी आई है। बल्कि यह स्थिति इसलिए है कि सरकारों की नीतियां प्रोत्साहन देने वाली साबित नहीं हो रही हैं। वहीं बाजार के रुझान इसे आर्थिक रूप से किसानों के हितों के प्रतिकूल बना रहे हैं। कहने को तो अकसर दलील दी जाती है कि पंजाब के किसानी से जुड़े संकटों का समाधान फसलों के विविधीकरण में निहित है। लेकिन विडंबना यह है कि विविधीकरण के दावों के बावजूद, सरसों के उत्पादक किसान प्रोत्साहन न मिल पाने से निराश हैं। दरअसल, किसान कम और अनिश्चित मुनाफे के चलते सरसों की फसल उगाने से गुरेज करता है। उसके सामने बड़ी चुनौती यह भी है कि सरसों की फसल की सरकारी खरीद सीमित मात्रा में होती है। जिसके चलते किसानों को खून-पसीने की उपज को बेचने के लिये व्यापारियों के रहमोकरम पर निर्भर रहना पड़ता है। वे अपने मोटे मुनाफे के लिये किसान के हितों की अनदेखी करने से नहीं चूकते। यही वजह है कि गेहूं और धान के विपरीत, जिनकी खरीद सुनिश्चित है और उनके लिये मजबूत विपणन प्रणाली मौजूद है, सरसों की फसल किसानों को बाजार की अस्थिरता के प्रति संवेदनशील बना देती है। फलतः किसानों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है।

दरअसल, इस संकट का दूसरा पहलू यह भी है कि पंजाब आज अपनी खाद्य तेल आवश्यकताओं का एक मामूली हिस्सा ही स्थानीय उत्पादन से पूरा करता है। इससे हमारी महंगे आयात पर निर्भरता और भी बढ़ जाती है। तिलहन की खेती को बढ़ावा देना अक्सर राष्ट्रीय प्राथमिकता के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। सही मायनों में सरकारी तंत्र द्वारा सरसों की उपज की खरीद में सहायता और न्यायसंगत मूल्य दिलाने के वायदे खोखले साबित होने के कारण सरसों की पैदावार का रकबा बढ़ता नहीं है। जिस दिन किसानों को तंत्र की नीतियों पर भरोसा पैदा हो जाएगा, उस दिन निश्चय ही किसान प्रोत्साहन के चलते तर्कसंगत प्रतिक्रिया देंगे। निर्विवाद रूप से पंजाब की धरती में सरसों उत्पादन की स्थितियों से जुड़ी संभावनाएं पर्याप्त हैं। यकीनी तौर पर यह धान की तुलना में कम पानी की खपत करती है। साथ ही भूजल संकट को कम करने के उद्देश्य से फसल विविधीकरण से जुड़ी रणनीतियों में स्वाभाविक रूप से फिट बैठती है। लेकिन हमें इस हकीकत को स्वीकार करना चाहिए कि पंजाब में विविधीकरण के लक्ष्य केवल नैतिक प्रोत्साहन से हासिल नहीं किए जा सकते। निश्चित रूप से इसके लिए अनिवार्य शर्त है कि बाजार की संरचना में जरूरत के अनुरूप बदलाव प्राथमिकता के आधार पर किए जाएं। सही मायनों में सरसों के लिये एमएसपी समर्थित खरीद और स्थानीय प्रसंस्करण, भंडारण और मूल्य श्रृंखलाओं में निवेश किसानों को सरसों की खेती अपनाने के लिये प्रोत्साहित कर सकता है। यही प्रयास पंजाब के खेतों में पीली आभा फिर से पैदा करने की दिशा में कारगर साबित होंगे। सही मायनों में पंजाब में सरसों की खेती की कहानी नीतिगत विसंगतियों को ही उजागर करती है। दरअसल, संस्थागत स्तर पर समर्थन कुछ चुनिंदा फसलों को दिया जाता रहा है। जब तक यह असंतुलन दूर नहीं किया जाता, सरसों एक खोये हुए अवसर का प्रतीक बनकर रह जाएगी। इस फसल के पुनरुद्धार के लिये महज नारों की ही नहीं, बल्कि उसी गंभीरता की आवश्यकता है, जो गेहूं और धान की फसलों को लेकर लंबे समय से बरती जाती रही है।

रचनात्मकता में एआई के उपयोग की सीमा का प्रश्न

> जब हर क्षेत्र में एआई का उपयोग बढ़ रहा है तो सवाल है कि रचनात्मकता यानी साहित्य व कला के संदर्भ में एआई का कितना उपयोग स्वीकार्य है। दरअसल, मानव सृजनात्मकता पर एआई के आक्रमण के प्रतिरोध और स्वीकृति का स्तर, समय व भूगोल के साथ बदलता रहता है। हालांकि कला क्षेत्र में रचनात्मकता को गंभीर मिलावट से तब तक बचाना चाहिये जब तक यह एक नई तरह की कला के लिए राह न खोल दे।

एक दिलचस्प समाचार के रूप में, न्यूजीलैंड के दो पुरस्कार विजेता लेखकों की किताबों, स्टेफनी जॉनसन के लघु कहानी संग्रह 'ओब्लिगेट कार्निवोर' और एलिजाबेथ स्मिथर के उपन्यास संग्रह 'एंजेल ट्रेन', को कृत्रिम बुद्धि (एआई) के उपयोग के कारण 65 हज़ार न्यूज़ीलैंड डॉलर पुरस्कार राशि वाले 2026 ओखम बुक अवॉर्ड्स (फिक्शन), जो देश का शीर्ष साहित्यिक पुरस्कार है, के लिए विचार करने के अयोग्य घोषित कर दिया गया। यह अस्वीकृति लेखन में एआई के उपयोग को लेकर नहीं बल्कि पुस्तकों के कवर डिज़ाइन के कारण हुई, जो एआई उपयोग संबंधी नए दिशानिर्देशों का पालन नहीं करते पाए गए। स्वाभाविक ही इस एआई युग में यह सवाल उठता है कि रचनात्मकता के संदर्भ में एआई का कितना उपयोग स्वीकार्य है। लक्ष्मण रेखा कहां होनी चाहिए?

मानव रचनात्मकता पर एआई के आक्रमण के प्रतिरोध और स्वीकृति का स्तर, समय और भूगोल के साथ बदलता रहता है। जर्मन फ़ोटोग्राफ़र बोरिस एल्डैग्सन 2023 में तब एक व्हिसलब्लोअर बन गए, जब उन्होंने सोनी वर्ल्ड फ़ोटोग्राफ़ी अवार्ड्स में क्रिएटिव ओपन श्रेणी का पुरस्कार यह कहकर स्वीकार नहीं किया कि विजेता छवि बनाने के लिए उन्होंने एआई का उपयोग किया था। लेकिन बीजिंग के सिंघुआ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर शेन यांग ने एआई का उपयोग करके केवल तीन घंटों में 'लैंड्स ऑफ मेमोरी' नामक पुस्तक बना दी और इसने अक्तूबर 2023 में, जियांग्सू यूथ पॉपुलर साइंस फिक्शन प्रतियोगिता में दूसरा पुरस्कार जीता। इसके अलावा, यह स्वीकार करने के बाद भी कि उनके उपन्यास 'टोक्यो-टू डोजो-टू' का 5 फीसदी शब्दशः चैटजीपीटी द्वारा बनाया गया था, जापानी लेखिका री कुडन ने 2024 में अकुतागावा पुरस्कार जीता, जो जापान के प्रतिष्ठित साहित्यिक सम्मानों में से एक है! कुडन के अनुसार, उन्होंने 'नरम और अस्पष्ट' शब्द खोजने को एआई की मदद ली थी, वे जो उनके उपन्यास में व्याप्त न्याय की जटिल अवधारणाओं को समाहित करते हों, इसे चयन समिति ने 'कोई गलत नहीं' माना। खैर, एड्रियन ब्रॉडी ने 'द ब्रुटलिस्ट' फिल्म में अपने द्वारा अभिनीत भूमिका में हंगेरियन भाषा बोलते समय, उच्चारण बेहतर बनाने के लिए, एआई के उपयोग के बावजूद इस वर्ष सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का अकादमी पुरस्कार जीता। इस वर्ष की अन्य ऑस्कर-नामांकित फिल्मों में, एआई क्लोनिंग का उपयोग जैक्स ऑडियार्ड के ट्रांसजेंडर गैंगस्टर म्युज़िकल एमिलिया पेरेज़ में कार्ला सोफिया गैसकॉन की गायन आवाज़ को बेहतर बनाने के लिए भी किया गया था। क्या यह स्पष्ट संकेत है कि हॉलीवुड भी मात्र दो सालों में एआई को स्वीकार कर अपने अभिनेताओं और पटकथा लेखकों के दोहरे हमले को मान्यता दे रहा है, यह सुनिश्चित करने को कि चलो श्रमिकों ने अपना काम नई तकनीक से बदलने की बजाय उस पर नियंत्रण तो बनाए रखा?

इसके उल्ट, अकादमिक पत्रिकाएं इन दिनों शोध पत्रों में एआई के उपयोग के विरुद्ध सख्त रुख रखे हैं, हालांकि चैटजीपीटी को 2022 के अंत व 2023 के शुरू में प्रकाशित कई शोधपत्रों में सह-लेखक सूचीबद्ध किया गया। सामान्यतः मानव रचनात्मकता के क्षेत्र में एआई की स्वीकृति या अस्वीकृति पर इंसान का दृष्टिकोण दुनियाभर में समान नहीं। क्या एक समान दृष्टिकोण असल में जरूरी है? एआई विकसित होने पर ट्रस्ट को मानदंडों की समीक्षा और सुधार करने की जरूरत पड़ सकती है। लगभग दो साल पूर्व, एआई टेक्स्ट-टू-इमेज जनरेटर 'स्टेबल डिफ्यूजन' द्वारा बनाई एक छवि को बीजिंग अदालत द्वारा कॉपीराइट संरक्षण प्रदान किया गया, जिसका मत था कि कलाकृति 'वादी की बौद्धिक कल्पना से बनाई गई थी' और 'व्यक्तिगत अभिव्यक्ति का मूर्त रूप है'। क्या यह बौद्धिक संपदा अधिकार प्राप्त करने को 'आधे-मानव, आधे-एआई कार्य' को मान्यता देने की दिशा में एक कदम है? आइए साहित्य क्षेत्र की स्थिति और उसमें एआई के कारण आए भूचाल पर नजर डालें। सलमान रुशदी ने कुछ माह पहले कहा था कि लेखकों को एआई से तब तक खतरा नहीं जब तक यह लोगों को हंसाने लायक न बन जाए। रुशदी के अनुसार, उन्हें यह दिखावा करना पसंद है, मानो एआई का कोई वजूद ही न हो। प्रसिद्ध कनाडाई लेखिका मार्गरेट एटवुड ने भी बीते साल साक्षात्कार में कहा कि वह अभी लेखन में 'अच्छा समय' बिता रही हैं और एआई के विकास बारे चिंतित होने के लिहाज से वे बहुत बूढ़ी हैं। हालांकि, हर लेखक रुश्दी या एटवुड की तरह अच्छी स्थिति में नहीं। और विचार भी भिन्न-भिन्न हैं। न्यूयॉर्क टाइम्स के पुस्तक समीक्षक एओ स्कॉट का मानना है कि लेखन में एआई का उपयोग एक नौटंकी और साहित्य के लिए घातक खतरा, दोनों है। जेनरेटिव एआई टूल्स और लार्ज लैंग्वेज मॉडल -लिखित उपन्यासों की बाढ़ बाजार में आने के साथ, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय का एक नया अध्ययन, जिसमें यूके फिक्शन प्रकाशन क्षेत्र के सैकड़ों रचनाकारों को शामिल किया गया, कॉपीराइट उल्लंघन, राजस्व हानि और कला स्वरूप के भविष्य के बारे में व्यापक चिंताओं का खुलासा करता है। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के मिंडेरू सेंटर फॉर टेक्नोलॉजी एंड डेमोक्रेसी (एमसीटीडी) की डॉ. क्लेमेंटाइन कोलेट ने एक हालिया अध्ययन किया है, जिसमें उन्होंने रिपोर्ट के लिए 332 लेखकों को शामिल कर सर्वेक्षण किया। इसके अनुसार, इन यूके के लेखकों में से आधे से अधिक (51 प्रतिशत) का मानना है कि एआई अंततः कथा लेखकों के रूप में उनके पेशे को बदल देगा। लगभग दो-तिहाई (59 प्रतिशत) लेखकों ने यह अहसास होने का दावा किया कि एआई एलएलएम मॉडल को उनकी सहमति या बिना पारिश्रमिक उनके काम का उपयोग करक प्रशिक्षित किया गया। एक-तिहाई से अधिक लेखकों का दावा है कि जेनरेटिव एआई उनकी आय पर नकारात्मक प्रभाव डाल चुका है, शायद अन्य नौकरियां छूटने के चलते वे उपन्यास लेखन में आए होंगे। अधिकांश उपन्यासकारों का अनुमान है कि भविष्य में एआई उनकी आय कम कर देगा। मनुष्यों पर एआई के प्रभुत्व की शुरुआत - मानव सभ्यता में एक परिवर्तन बिंदु - 1997 में चिन्हित हुई जब आईबीएम के सुपर कम्प्यूटर डीप ब्लू ने विश्व शतरंज चैंपियन गैरी कास्परोव को हराया था। दो दशक बाद, एआई को खतरा मानने वाले कई आलोचकों के उलट, कास्परोव ने अपनी 2017 की पुस्तक 'डीप थिंकिंग' में तर्क दिया कि नई ऊंचाइयों तक पहुंचने को मानवता इसके सबसे उल्लेखनीय आविष्कारों से डरने के बजाय स्वागत करे। हालांकि, किस स्तर तक? मानव रचनात्मकता किस हद तक एआई तूफान के बावजूद बच सकती है? आज, एआई का उपयोग मूर्तियां, पेंटिंग और तस्वीरें बनाने के लिए किया जा रहा है, जिनमें से कुछ हजारों डॉलर में बिक रही हैं। क्या हमें इस पर पुनर्विचार की ज़रूरत है कि कला क्या है? निश्चित रूप से, नई तकनीक को लेकर विगत की मिसालें हैं, जो हमें रचनात्मकता के बंधनों से मुक्त कराती हैं। जब 19वीं शताब्दी में पहली बार फोटोग्राफी विकसित हुई तो कई कलाकारों का मानना था कि कैमरा कलाकार का दुश्मन है और इससे बनी छवियां कला प्रतिष्ठान की दुश्मन हैं। हालांकि, फोटोग्राफी ने पेंटिंग की जगह नहीं ली; बल्कि 20वीं सदी के प्रायोगिक आधुनिक कला आंदोलन के विकास में उत्प्रेरक का काम किया, क्योंकि कलाकार यथार्थवाद से अमूर्तता की ओर स्थानांतरित हो गए और आज की समकालीन कला का आधार तैयार किया। फोटोग्राफी भी कला का दूसरा रूप बन गई।

बहरहाल, हमारा दायित्व है कि हम मानव रचनात्मकता को गंभीर मिलावट से तब तक बचाएं जब तक यह एक नई तरह की कला के लिए रास्ता न खोल दे, जो चले आ रहे रिवायती मानव कला रूपों से अलग हो। इसके अतिरिक्त, वैश्वीकरण के इस युग में, एक समान मानदंड बनाने के लिए दुनिया भर के विधायकों और अदालतों को नीति निर्माताओं के रूप में प्रमुख भूमिका निभानी चाहिए।

प्रेरणा

जिम्मेदारी का स्पर्श और मनुष्य का रूपांतरण

मानव जीवन में बदलाव का सबसे सशक्त माध्यम उपदेश नहीं, बल्कि जिम्मेदारी होती है। जब किसी व्यक्ति को यह एहसास कराया जाता है कि वह किसी कार्य का केंद्र है, उस पर विश्वास किया गया है और उसके निर्णय मायने रखते हैं, तभी उसके भीतर छिपी संभावनाएं जागृत होती हैं। यही तथ्य विनोबा भावे के जीवन की एक सच्ची घटना में अत्यंत सहज और प्रभावशाली ढंग से सामने आता है, जो केवल एक जिद्दी युवक की कहानी नहीं, बल्कि पूरे समाज के लिए एक गहरी सीख है। भूदान आंदोलन के दिनों में विनोबा भावे देश के गांव-गांव घूम रहे थे। उनका व्यक्तित्व, उनका शांत स्वर और उनका व्यवहार स्वयं में ही परिवर्तन की शक्ति रखता था। उन्हीं दिनों वे एक गांव में ठहरे हुए थे। वहां एक महिला, जिसका मन अपने पुत्र को लेकर बहुत व्यथित था, विनोबा जी के पास आई। उसका बेटा जिद्दी था, बात-बात पर उलझ जाता था, किसी की नहीं सुनता था और परिवार के लिए चिंता का कारण बन गया था। मां ने सोचा था कि शायद विनोबा जी कोई उपदेश देंगे, डांटेंगे या उसे सुधारने का कोई कठोर उपाय बताएंगे।

लेकिन विनोबा जी का तरीका हमेशा अलग होता था। उन्होंने उस महिला की पूरी बात बड़े ध्यान से सुनी और फिर बहुत सरलता से कहा, "कल से उसे शिविर में भेज दो।" न कोई लंबा प्रवचन, न कोई नैतिक भाषण। महिला थोड़ी चकित हुई, लेकिन उसने बेटे से यह कहकर बात की कि वह बस एक दिन शिविर जाकर देख आए। बेटे में उत्सुकता जागी और वह अगले ही दिन शिविर पहुंच गया। शिविर में जैसे ही वह युवक पहुंचा, विनोबा जी ने उसे अलग से बैठाकर कोई सवाल-जवाब नहीं किए, न उसके स्वभाव पर टिप्पणी की। इसके बजाय उन्होंने उसे उसी समय दो-तीन घंटे की एक छोटी-सी जिम्मेदारी सौंप दी। वह जिम्मेदारी बहुत बड़ी नहीं थी, लेकिन उसके लिए महत्वपूर्ण थी। उसे कुछ लोगों के साथ तालमेल बैठाना था, कुछ व्यवस्था संभालनी थी और समय का ध्यान रखना था। युवक को पहली बार लगा कि कोई उसे गंभीरता से ले रहा है, कोई उस पर भरोसा कर रहा है। यह एहसास उसके लिए नया था। उसने पूरी लगन से वह जिम्मेदारी निभाई। जब काम पूरा हुआ, तो विनोबा जी ने सबके सामने उसकी खुले दिल से प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि यह काम बहुत अच्छे ढंग से किया गया है और उसमें नेतृत्व की क्षमता साफ दिखाई देती है। यह सुनकर युवक के भीतर कुछ बदल गया। जिस आत्मसम्मान की उसे तलाश थी, वह पहली बार उसे मिला। फिर विनोबा जी ने उससे बहुत आत्मीयता से कहा, "बेटा, तुम योग्य हो, अगर चाहो तो सात दिन यहीं रुक जाओ।" यह आदेश नहीं था, यह आग्रह था। और यही आग्रह युवक के दिल को छू गया। वह सात दिन रुक गया।

इन सात दिनों में कोई चमत्कार नहीं हुआ, कोई जादू नहीं चला। बस रोज उसे कुछ न कुछ छोटी जिम्मेदारियां दी जाती रहीं। कभी किसी को समझाने की, कभी किसी काम की निगरानी करने की, कभी नए लोगों का स्वागत करने की। हर बार काम पूरा होने पर उसे यह महसूस कराया गया कि उसका योगदान महत्वपूर्ण है। धीरे-धीरे उसका व्यवहार बदलने लगा। उसकी भाषा में संयम आया, उसकी आंखों में आत्मविश्वास झलकने लगा और उसके भीतर छिपी संवेदनशीलता बाहर आने लगी। सात दिन बाद वही महिला शिविर में आई। उसने अपने बेटे को दूर से देखा। वह किसी व्यक्ति से बहुत शांति और सौम्यता से बात कर रहा था। मां चुपचाप पास खड़ी होकर सुनने लगी। वह यह सुनकर स्तब्ध रह गई जब उसका बेटा कह रहा था, "देखो, मानव जीवन बहुमूल्य है। सजग और सतर्क रहकर दायित्व का निर्वहन करना चाहिए। यही जीवन का सर्वोत्तम मार्ग है।" यह वही बेटा था जो कभी किसी की बात सुनने को तैयार नहीं होता था, और आज दूसरों को जीवन की दिशा समझा रहा था।

मां की आंखों में आंसू आ गए। उसे समझ नहीं आ रहा था कि सात दिनों में ऐसा क्या हुआ कि उसका बेटा इतना बदल गया। वह सीधे विनोबा जी के पास गई और कृतज्ञता से भरे स्वर में पूछा कि उन्होंने ऐसा कौन-सा मंत्र दे दिया। विनोबा जी मुस्कराए और बहुत सहजता से बोले कि उन्होंने कोई मंत्र नहीं दिया। उन्होंने सिर्फ उसके बेटे को जिम्मेदारी दी। उन्होंने कहा कि ये गुण उसके भीतर पहले से थे, बस उन्हें पहचानने और प्रकट होने का अवसर नहीं मिला था।

यह घटना हमें यह समझाती है कि समाज में जिन लोगों को हम बिगड़ा हुआ, जिद्दी या असफल मान लेते हैं, उनके भीतर भी अपार संभावनाएं छिपी होती हैं। अक्सर हम उन्हें उपदेश देते हैं, आलोचना करते हैं या दंड देने की बात करते हैं, लेकिन जिम्मेदारी सौंपने का साहस नहीं करते। जब किसी व्यक्ति को यह भरोसा दिया जाता है कि वह सक्षम है, तो वह स्वयं को साबित करने के लिए आगे बढ़ता है।

आज के समय में यह कहानी और भी प्रासंगिक हो जाती है। परिवार में बच्चे हों, समाज में युवा हों या कार्यस्थल पर कर्मचारी, हर जगह यही सिद्धांत लागू होता है। केवल आदेश और निर्देश से बदलाव नहीं आता, बल्कि विश्वास और जिम्मेदारी से आता है। विनोबा भावे का यह तरीका केवल एक व्यक्ति को नहीं, बल्कि पूरे समाज को दिशा देने वाला है। जिम्मेदारी का यह छोटा-सा बीज जब सही भूमि में पड़ता है, तो उससे चरित्र, चेतना और परिवर्तन का विशाल वृक्ष खड़ा हो जाता है।

2025 में BJP और NDA को मिली सफलताओं ने भविष्य की राजनीति की दिशा तय कर दी है

साल 2025 भारतीय राजनीति में भारतीय जनता पार्टी के लिए एक ऐतिहासिक और निर्णायक वर्ष बनकर सामने आया। यह वर्ष केवल चुनावी आंकड़ों की कहानी नहीं बयां करके जा रहा है बल्कि उस गहरे जन विश्वास का साक्ष्य देकर जा रहा है जो भाजपा ने निरंतर अपने कार्य, नीति और संगठनात्मक अनुशासन से अर्जित किया है। साल की शुरुआत से लेकर अंत तक, चाहे दिल्ली विधानसभा चुनाव हों, विभिन्न राज्यों के नगर निकाय और पंचायत चुनाव हों या फिर बिहार विधानसभा का महासंग्राम, भाजपा ने हर मोर्चे पर यह साबित कर दिया कि वह आज भी जनता की पहली पसंद बनी हुई है।

साल की शुरुआत दिल्ली विधानसभा चुनाव से हुई, जहां भाजपा ने यह स्पष्ट संदेश दिया कि देश की राजधानी को स्थिर, सक्षम और दूरदर्शी शासन की आवश्यकता है। विकास, बुनियादी सुविधाओं, स्वच्छ प्रशासन और राष्ट्रीय दृष्टि के मुद्दों को केंद्र में रखकर लड़ा गया यह चुनाव मुफ्त सौगातों की राजनीति करने वालों पर भारी पड़ा। दिल्ली के मतदाता ने यह महसूस किया कि भाजपा केवल वादे नहीं करती, बल्कि परिणाम देती है। इस जीत ने वर्ष 2025 के राजनीतिक स्वर को साल के शुरू में ही तय कर दिया था।

दिल्ली विधानसभा चुनावों के बाद महाराष्ट्र, गोवा, अरुणाचल प्रदेश, असम जैसे राज्यों में हुए नगर निकाय और पंचायत चुनावों में भाजपा की अपार सफलता ने यह साबित कर दिया कि पार्टी की पकड़ केवल विधानसभा और लोकसभा तक सीमित नहीं है। महाराष्ट्र के शहरी निकायों से लेकर असम और अरुणाचल के गांवों तक, भाजपा ने स्थानीय मुद्दों को समझते हुए विकास का भरोसा दिया। गोवा में स्थिर प्रशासन और पारदर्शिता की छवि ने मतदाताओं को प्रभावित किया, जबकि पूर्वोत्तर राज्यों में बुनियादी ढांचे, कनेक्टिविटी और केंद्र सरकार की सक्रिय भागीदारी ने भाजपा को मजबूत आधार प्रदान किया। पंचायत और निकाय स्तर पर मिली ये जीतें इस बात का प्रमाण हैं कि भाजपा जमीनी राजनीति में भी अजेय होती जा रही है।

भाजपा की इस निरंतर विजय का एक प्रमुख आधार है उसका मजबूत संगठन और बूथ स्तर तक फैला कार्यकर्ता नेटवर्क। पार्टी सभी चुनावों को एक मिशन के रूप में लड़ती है। हर बूथ पर कार्यकर्ता की जिम्मेदारी तय होती है, मतदाता से सीधा संवाद स्थापित किया जाता है और स्थानीय समस्याओं को एजेंडे में शामिल किया जाता है। यही कारण है कि भाजपा अक्सर वहां भी चमत्कार कर दिखाती है, जहां मुकाबला कठिन माना जाता है। संगठन की यह तल्लीनता और अनुशासन भाजपा को अन्य दलों से अलग खड़ा करता है।

इस पूरी विजय यात्रा के केंद्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का नेतृत्व सबसे बड़ी शक्ति बनकर उभरा है। मोदी का नेतृत्व जनता को इसलिए भा रहा है क्योंकि उनमें निर्णय क्षमता, स्पष्ट दृष्टि और राष्ट्र प्रथम का भाव साफ दिखाई देता है। प्रधानमंत्री की कार्यशैली ने जनता के मन में यह भरोसा पैदा किया है कि देश सुरक्षित हाथों में है। चाहे राष्ट्रीय सुरक्षा का सवाल हो, आर्थिक सुधार हों या फिर गरीब और मध्यम वर्ग के कल्याण की योजनाएं, मोदी के नेतृत्व में लिए गए फैसलों ने भाजपा को एक विश्वसनीय राजनीतिक विकल्प के रूप में स्थापित किया है। चुनावों में यह भरोसा मतों में बदलता हुआ साफ नजर आता है।

इसके अलावा, साल 2025 में पार्टी को नया राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष मिलना भी इस विजय गाथा का अहम अध्याय है। यह बदलाव भाजपा की विचार आधारित राजनीति का उदाहरण है। माना जा रहा है कि नए अध्यक्ष के साथ संगठन में नई ऊर्जा और नई रणनीति देखने को मिलेगी। नेतृत्व परिवर्तन को सहजता से स्वीकार करना भाजपा की आंतरिक लोकतांत्रिक परंपरा को दर्शाता है, जहां व्यक्ति से अधिक संगठन और विचारधारा को महत्व दिया जाता है। साथ ही बिहार में मंत्री रहे नितिन नबीन को राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बनाना यह भी दर्शाता है कि भाजपा में कोई साधारण कार्यकर्ता भी अपने परिश्रम के चलते राष्ट्रीय स्तर पर नेतृत्व करने की भूमिका में आ सकता है।

इसके अलावा, एनडीए के सहयोगियों के साथ तालमेल भाजपा की एक और बड़ी ताकत साबित हुआ है। साल 2025 में यह साफ दिखा कि भाजपा गठबंधन को मजबूरी नहीं, बल्कि सामूहिक शक्ति के रूप में देखती है। क्षेत्रीय दलों को सम्मान, स्पष्ट भूमिका और साझा विकास एजेंडा देकर भाजपा ने एनडीए को अजेय गठबंधन में बदल दिया। इसी एकजुटता का परिणाम रहा कि देश के अलग अलग हिस्सों में एनडीए का विजय रथ बिना रुके आगे बढ़ता रहा।

साल के अंत में बिहार विधानसभा चुनाव इस पूरे वर्ष की राजनीति का निर्णायक मोड़ बने। बिहार में भाजपा ने जातीय राजनीति से ऊपर उठकर विकास, रोजगार, कानून व्यवस्था और युवाओं के भविष्य को केंद्र में रखा। आक्रामक लेकिन तथ्य आधारित प्रचार ने जनता को यह सोचने पर मजबूर किया कि राज्य को स्थायी और मजबूत शासन की जरूरत है। बिहार की जीत ने यह साबित कर दिया कि भाजपा सामाजिक समीकरणों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने में सफल रही है।

देखा जाये तो भाजपा की लगातार जीत का मूल कारण है जन विश्वास। यह विश्वास भाषणों से नहीं, बल्कि काम से बना है। गरीब कल्याण, किसान सहायता, महिला सशक्तिकरण, बुनियादी ढांचे का विस्तार और वैश्विक मंच पर भारत की मजबूत उपस्थिति ने आम नागरिक के मन में गर्व और भरोसा दोनों को मजबूत किया है। विपक्ष जहां आरोपों और भ्रम की राजनीति में उलझा रहा, वहीं भाजपा ने हर सवाल का जवाब अपने काम से दिया।

बहरहाल, साल 2025 की यह विजय गाथा स्पष्ट संकेत देती है कि भाजपा केवल वर्तमान की सत्ता नहीं, बल्कि भविष्य की राजनीति की दिशा तय करने वाली शक्ति बन चुकी है।

अभियान

माया की परीक्षा और देवर्षि का टूटता अहं

देवर्षि नारद का नाम आते ही भक्ति, वैराग्य और ज्ञान का स्मरण होता है। जिनकी वीणा से निकला हर स्वर नारायण के नाम से जुड़ा है, जिनका जीवन ही लोक-लोक में धर्म का संदेश फैलाने के लिए समर्पित है, वही नारद जब माया की पकड़ में आते हैं, तब यह प्रसंग केवल एक पौराणिक कथा नहीं रह जाता, बल्कि साधक के मन के भीतर छिपे अहं और भ्रम की गहन परतों को उजागर कर देता है। यह कथा बताती है कि ज्ञान कितना भी ऊँचा क्यों न हो, यदि उसमें अहं का स्पर्श आ जाए, तो वही ज्ञान पतन का कारण बन सकता है।

श्रीहरि के वचनों को सुनकर नारद मुनि अत्यंत प्रसन्न और उत्साहित थे। उन्हें यह विश्वास हो चला था कि प्रभु उनके मन की कामना को अवश्य पूर्ण करेंगे। यद्यपि भगवान विष्णु स्वयं उनके सामने उपस्थित थे, किंतु नारद का चित्त अब प्रभु के चरणों में नहीं, बल्कि विश्वमोहिनी की कल्पना में उलझ चुका था। माया ने उनके विवेक पर ऐसा आवरण डाल दिया था कि वे भगवान के संकेतों को भी अपने पक्ष में समझने लगे। श्रीहरि ने रोगी और वैद्य का उदाहरण देकर स्पष्ट कर दिया था कि जो हितकारी होता है, वह कभी कुपथ की अनुमति नहीं देता। किंतु नारद मुनि उस गूढ़ संदेश को समझ नहीं पाए। कारण यह नहीं था कि वे मूर्ख थे, कारण यह था कि माया के प्रभाव में बुद्धि भी अपनी दिशा खो देती है।

भगवान विष्णु के अंतर्धान होते ही नारद मुनि पूर्ण आश्वस्त होकर स्वयंवर भूमि की ओर चल पड़े। उनके मन में किसी प्रकार का संशय नहीं था। उन्हें लग रहा था कि संसार की सबसे सुंदर स्त्री अब उन्हीं के लिए बनी है। स्वयंवर सभा का दृश्य अत्यंत भव्य था। चारों ओर से आए राजा, राजकुमार, अपने तेज, वैभव और सौंदर्य से सभा को प्रकाशित कर रहे थे। स्वर्ण जड़ित आसन, रत्नों की चमक और शंख-नाद से वातावरण दिव्य प्रतीत हो रहा था। किंतु इस सबके बीच नारद मुनि अपने ही विचारों में मग्न थे। उन्हें प्रतीत हो रहा था कि इन सब राजाओं से अधिक सुंदर और योग्य वही हैं। उनके मन में यह अहं जन्म ले चुका था कि विश्वमोहिनी की दृष्टि पड़ते ही वह उन्हें ही चुनेगी।

नारद मुनि यह नहीं जानते थे कि श्रीहरि की लीला उनके अहं को तोड़ने के लिए रची जा रही है। भगवान विष्णु ने उन्हें ऐसा रूप प्रदान किया था, जो बाहरी दृष्टि से संत का था, किंतु दिव्य दृष्टि में वानर का। यह रूप केवल स्वयं भगवान और शिवजी के गण ही देख पा रहे थे। अन्य सभी के लिए नारद मुनि वही तेजस्वी देवर्षि थे, किंतु स्वयं नारद अपने सौंदर्य के भ्रम में डूबे हुए थे। यही माया की सबसे गहरी चाल है, कि वह व्यक्ति को स्वयं के प्रति अंधा बना देती है।

उसी सभा में शिवजी के दो गण ब्राह्मण के वेश में उपस्थित थे। वे भगवान की लीला से भलीभांति परिचित थे और स्वभाव से अत्यंत विनोदी थे। वे जानबूझकर नारद मुनि के पास आकर बैठ गए। बार-बार नारद को देखकर आपस में कहते कि भगवान ने मुनि को अद्भुत सुंदरता प्रदान की है, कि राजकुमारी इन्हें देखते ही मोहित हो जाएगी। वे 'हरि' शब्द का प्रयोग कर रहे थे, जिसका एक अर्थ भगवान विष्णु और दूसरा अर्थ वानर होता है। यह द्विअर्थी शब्द ही इस लीला की कुंजी था। शिवगणों के वचनों में व्यंग्य छिपा था, किंतु नारद मुनि उसे प्रशंसा समझ बैठे।

उन शब्दों ने नारद के अहं को और पुष्ट कर दिया। उन्हें यह तनिक भी आभास नहीं हुआ कि जिन वचनों से वे प्रसन्न हो रहे हैं, वही उनके भ्रम को और गहरा कर रहे हैं। अभिमान मनुष्य को संकेतों को समझने से रोक देता है। यही कारण है कि नारद जैसे महान ज्ञानी भी उस क्षण शब्दों के भीतर छिपे अर्थ को नहीं पहचान पाए।

अब वह क्षण समीप आ गया, जब विश्वमोहिनी स्वयंवर सभा में प्रवेश करने वाली थी। वातावरण में एक अद्भुत सन्नाटा और उत्सुकता फैल गई। सभी की दृष्टियां द्वार पर टिक गईं। नारद मुनि का हृदय तीव्र गति से धड़कने लगा। उनके मन में यह दृढ़ विश्वास था कि वरमाला उनके ही गले में पड़ेगी। उन्हें यह नहीं पता था कि भगवान की कृपा और भगवान की परीक्षा, दोनों एक साथ चल सकती हैं।

जैसे ही विश्वमोहिनी सभा में प्रवेश करने वाली थी, नारद मुनि अपने भीतर एक अद्भुत आत्मविश्वास का अनुभव कर रहे थे। किंतु यह आत्मविश्वास भक्ति से नहीं, बल्कि सौंदर्य और चयन की अपेक्षा से उपजा था। यही वह बिंदु था, जहां साधक की परीक्षा होती है। जब साधना का फल अहं को पुष्ट करने लगे, तब वही साधना बंधन बन जाती है।

यह कथा हमें यह सिखाती है कि माया केवल सांसारिक विषयों में ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक पथ पर भी परीक्षा लेती है। जो स्वयं को साधक मान लेता है, वही सबसे अधिक सतर्क रहने की आवश्यकता रखता है। नारद मुनि की यह लीला बताती है कि भगवान अपने भक्त को गिराने के लिए नहीं, बल्कि उठाने के लिए उसके अहं को तोड़ते हैं। आगे की कथा में नारद मुनि को जिस पीड़ा और उपहास से गुजरना है, वह अंततः उन्हें और अधिक शुद्ध भक्ति की ओर ले जाने वाला है। क्योंकि जब अहं टूटता है, तभी सच्ची विनय जन्म लेती है, और जब विनय आती है, तभी भक्ति अपने पूर्ण स्वरूप में प्रकट होती है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने सूरत जिले की नवगठित अंबिका तहसील में राष्ट्रीय आदिवासी उद्योग मेला-2025 का प्रारंभ कराया

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिया गया 'वोकल फॉर लोकल-लोकल फॉर ग्लोबल' का मंत्र यह तीन दिवसीय राष्ट्रीय उद्योग मेला साकार करेगा : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▶ मुख्यमंत्री ने सूरत जिले में 858 करोड़ रुपए के विभिन्न विकास कार्यों का ई-शिलान्यास तथा ई-लोकार्पण किया

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने सूरत जिले की अंबिका तहसील में आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय आदिवासी उद्योग मेले का शुक्रवार को प्रारंभ कराते हुए विश्वास व्यक्त किया कि यह मेला प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिया गया वोकल फॉर लोकल-लोकल फॉर ग्लोबल का मंत्र साकार करेगा। राज्य के समस्त आदिवासी समाज तथा सहयोगी संस्थाओं के उपक्रम से इस राष्ट्रीय आदिवासी उद्योग मेले का 26 से 29 दिसंबर के दौरान सूरत जिले की नवगठित अंबिका तहसील के वसराई में आयोजन किया गया है। आदिवासी समाज के युवक-युवतियों को स्वरोजगार की प्रेरणा तथा छोटे एवं मध्यम स्तर के एमएसएमई, उद्योगकारों और व्यवसायों को एक मंच पर लाकर व्यवसाय-उद्योगों की व्यापकता बढ़ाने के दृष्टिकोण के साथ यह मेला आयोजित हुआ है। इतना ही नहीं; इस मेले में 370 से अधिक स्टॉल्स, आदिवासी व्यंजनों के 80 से अधिक स्टॉल्स, देशभर के राज्यों के 700 से अधिक प्रतिनिधियों की सहभागिता तथा एमएसएमई के लिए बिजनेस वर्कशॉप 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के संकल्प को साकार करेंगे। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने वित्त एवं शहरी विकास मंत्री श्री कनुभाई देसाई, आदिजाति विकास मंत्री नरेशभाई पटेल तथा राज्य मंत्री डॉ. जयराम गामित की उपस्थिति में इस मेले का उद्घाटन करने के साथ सूरत जिले में सड़क एवं भवन विभाग द्वारा 858 करोड़ रुपए के विभिन्न विकास कार्यों का ई-शिलान्यास तथा ई-लोकार्पण किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री ने विकसित तथा आत्मनिर्भर भारत का जो विजन दिया है, उसमें आदिवासी उद्योगों, परंपरागत कला-कारीगरी तथा एमएसएमई द्वारा

योगदान दिए जाने में यह मेला नई दिशा देगा। उन्होंने कहा कि गुजरात प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए आत्मनिर्भर-स्वदेशी भारत के इस विजन को भली-भाँति पूरा कर रहा है। उन्होंने इसकी भूमिका की सफलता का वर्णन करते हुए कहा कि राज्य सरकार ने स्वयं-सहायता समूह की महिलाओं तथा स्टार्टअप्स को प्रोत्साहन एवं कौशलवर्धन केन्द्र से युवाओं को जॉब सीकर से जॉब गिवर बनाया है। उन्होंने इस बात पर गर्व व्यक्त किया कि सदियों से परिश्रम, प्रामाणिकता तथा स्वाभिमान के साथ जीने वाले गुजरात के आदिवासी समाज के सर्वग्राही विकास के लिए, प्रधानमंत्री द्वारा शुरू कराई गई 2 लाख करोड़ रुपए की जनजातीय कल्याण योजना देश में आदिवासियों के विकास के लिए दिशादर्शक बनी है। आदिजाति विकास मंत्री श्री नरेशभाई पटेल ने कहा कि आज हमारे लिए, गौरव का दिन है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री के रूप में शुरू की गई विकास यात्रा को मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने अविरत बनाए रखा है। ट्राइबल ट्रेड फेयर आदिवासी संस्कृति के संरक्षण के साथ आदिवासी युवाओं को उद्योग-धंधे का अवसर देकर स्थानीय स्तर पर रोजगार देने का प्रयास है। उन्होंने आदिवासी युवा कौशल विकसित कर आगे बढ़ें; ऐसे प्रयासों में सहभागी होने का अनुरोध किया। महुवा के विधायक श्री मोहनभाई ढोडिया ने कहा कि आदिवासी समाज को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार आपके द्वार पर आई है। आदिवासी उद्यमियों को प्रोत्साहित करने का यह अवसर है। इस सरकार ने आदिवासी समाज की चिंता की है। उन्होंने नई तहसील अंबिका के गठन के लिए राज्य सरकार को अभिनंदन दिया। समस्त आदिवासी समाज के अध्यक्ष डॉ. प्रदीप गरासिया ने ट्राइबल ट्रेड फेयर का विवरण देते हुए कहा कि राज्य सरकार स्वदेशी अपनाने के लिए आगे आई है, तब इस ट्राइबल ट्रेड फेयर में लगभग 400 स्टॉल्स हैं। विशेषकर इस फेयर में वोकल फॉर लोकल, प्राकृतिक खेती, आदिवासी खाना-खजाना को प्रोत्साहित कर उद्यमियों को स्वरोजगार प्राप्त कराने का आशय रहा है। उन्होंने बताया कि इको फ्रेंडली बिजनेस सेंटर स्थापित करने की भी योजना है। ट्राइबल ट्रेड फेयर के प्रारंभ अवसर पर राष्ट्रीय जनजाति आयोग के अध्यक्ष श्री अंतर सिंह आर्य, अनुसूचित जाति कल्याण संबंधी संसदीय समिति की अध्यक्षा डॉ. फग्गन सिंह कुलस्ते, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती भाविनी पटेल, बारडोली के सांसद श्री प्रभुभाई वसावा, वलसाड के सांसद श्री धवलभाई पटेल, विधायक सर्वश्री गणपतसिंह वसावा, ईश्वरभाई परमार, कुंवरजी हळपति, संदीपभाई देसाई, विजयभाई पटेल, मुकेशभाई पटेल, मोहनभाई कोंकणी, सामाजिक अग्रणी श्री मानसिंह पटेल, जिला विकास अधिकारी सुश्री शिवानी गोयल सहित महानुभाव उपस्थित रहे।

-: मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-

▶ विकसित-आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में आदिवासी उद्योगों, हस्तकला कारीगरों तथा एमएसएमई को योगदान देने में राष्ट्रीय आदिवासी उद्योग मेला नई दिशा देगा

▶ परिश्रम, प्रामाणिकता तथा स्वाभिमान के साथ जीने वाले आदिवासी समाज के सर्वग्राही विकास के लिए प्रधानमंत्री द्वारा शुरू कराई गई 2 लाख करोड़ रुपए की जनजातीय कल्याण योजना देश के लिए

कांदिवली–बोरीवली सेक्शन पर 6वीं लाइन के कार्य के संबंध में पश्चिम रेलवे का मेजर ब्लॉक

(जीएनएस)। कांदिवली–बोरीवली सेक्शन पर 6वीं लाइन के कार्य को पूरा करने के लिए 20/21 दिसम्बर, 2025 की रात्रि से 18 जनवरी, 2026 तक कुल 30 दिनों का ब्लॉक लिया जा रहा है। इस ब्लॉक के कारण पश्चिम रेलवे की कुछ ट्रेनें प्रभावित होंगी।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, बोरीवली स्टेशन पर इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग (EI) पैनल के कमीशनिंग कार्य हेतु 27/28 दिसम्बर, 2025 को 01:00 बजे से 07:00 बजे तक अप एवं डाउन फास्ट लाइनों पर एक मेजर नॉन-इंटरलॉकिंग ब्लॉक लिया जाएगा। इस दौरान कुछ अप मेल/एक्सप्रेस ट्रेनों का ठहराव बोरीवली स्टेशन पर नहीं होगा। इसके अतिरिक्त, ब्लॉक के पश्चात बोरीवली स्टेशन के प्लेटफॉर्म संख्या 8 एवं 9 को 29 दिसम्बर, 2025 तक निलंबित रखा जाएगा।

इस ब्लॉक के कारण, 5वीं लाइन तथा बोरीवली स्टेशन के प्लेटफॉर्म संख्या 8 एवं 9 के निलंबन के चलते कुछ उपनगरीय सेवाएं निरस्त रहेंगी तथा बोरीवली/अंधेरी से चलने वाली कुछ ट्रेनें हार्बर लाइन पर केवल गोरेगांव तक ही चलाई जाएंगी।

निरस्त होने वाली ट्रेन:

1.28 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 69174 दहानू रोड– बोरीवली मेमू निरस्त रहेगी।

ठहराव में परिवर्तन (हॉल्ट स्किपेज):

1.26 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19038 बरौनी–बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस, बोरीवली स्टेशन पर नहीं रुकेगी, इसके स्थान पर वसई रोड स्टेशन पर अतिरिक्त ठहराव दिया जाएगा।

2.27 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 22946 ओखा–दादर एक्सप्रेस, बोरीवली स्टेशन पर नहीं रुकेगी, इसके स्थान पर वसई रोड एवं अंधेरी स्टेशन पर अतिरिक्त ठहराव दिया जाएगा।

3.27 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 22904 भुज–बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस, बोरीवली स्टेशन पर नहीं रुकेगी, इसके स्थान पर वसई रोड एवं अंधेरी स्टेशन पर अतिरिक्त ठहराव दिया जाएगा।

4.27 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 09052 भुसावल–दादर विशेष ट्रेन, बोरीवली स्टेशन पर नहीं रुकेगी, इसके स्थान पर वसई रोड एवं अंधेरी स्टेशन पर अतिरिक्त ठहराव दिया जाएगा।

5.27 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 22928 अहमदाबाद – बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस, बोरीवली स्टेशन पर नहीं रुकेगी, इसके स्थान पर वसई रोड स्टेशन पर अतिरिक्त ठहराव दिया जाएगा।

6.27 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 12928 एकता नगर – दादर एक्सप्रेस, बोरीवली स्टेशन पर नहीं रुकेगी, इसके स्थान पर वसई रोड स्टेशन पर अतिरिक्त ठहराव दिया जाएगा।

शॉर्ट टर्मिनेट/ओरिजिनेट होने वाली ट्रेनें:

1. 27 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19426 नंदुरबार–बोरीवली एक्सप्रेस, बोरीवली स्टेशन के स्थान पर वसई रोड स्टेशन पर टर्मिनेट की जाएगी।
2. 27 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19418 अहमदाबाद–बोरीवली एक्सप्रेस, बोरीवली स्टेशन के स्थान पर वसई रोड स्टेशन पर टर्मिनेट की जाएगी।
3. 28 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 69139 बोरीवली–वलसाड एक्सप्रेस, बोरीवली स्टेशन के स्थान पर दहानू रोड स्टेशन से ओरिजिनेट की जाएगी।
4. 28 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19417 बोरीवली–अहमदाबाद एक्सप्रेस, बोरीवली स्टेशन के स्थान पर वसई रोड स्टेशन से ओरिजिनेट की जाएगी।
5. 28 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19425 बोरीवली–नंदुरबार एक्सप्रेस, बोरीवली स्टेशन के स्थान पर वसई रोड स्टेशन से ओरिजिनेट की जाएगी।

रिशेड्यूल की जाने वाली ट्रेनें:

1. 28 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 22921 बांद्रा टर्मिनस– गोरखपुर एक्सप्रेस, 02 घंटे रिशेड्यूल की जाएगी।
2. 28 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 22953 मुंबई सेंट्रल– अहमदाबाद एक्सप्रेस, 01 घंटा 35 मिनट रिशेड्यूल की जाएगी।
3. 28 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20901 मुंबई सेंट्रल– गांधीनगर केपिटल एक्सप्रेस, 01 घंटा रिशेड्यूल की जाएगी।
4. 28 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 12953 बांद्रा टर्मिनस–सूरत एक्सप्रेस, 50 मिनट रिशेड्यूल की जाएगी।
5. 27 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19218 वेरावल–बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस, 01 घंटा रिशेड्यूल की जाएगी।
6. 27 दिसम्बर, 2025 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 12902 अहमदाबाद–दादर एक्सप्रेस, 01 घंटा रिशेड्यूल की जाएगी।

ब्लॉक के कारण प्रभावित होने वाली ट्रेनों का विवरण संलग्न परिशिष्टों (Annexures) में दिया गया है।

परिशिष्ट–I: 27 दिसम्बर, 2025 को निरस्त की जाने वाली ट्रेनें।

परिशिष्ट–II: 28 दिसम्बर, 2025 को निरस्त की जाने वाली ट्रेनें।

परिशिष्ट–III: 29 दिसम्बर, 2025 को निरस्त की जाने वाली ट्रेनें।

नोट: उपनगरीय ट्रेनों पर पड़ने वाले प्रभाव की सूचना समयानुसार दी जाएगी।

31 दिसम्बर, 2025 को नववर्ष की सुविधा को ध्यान में रखते हुए किसी भी असामान्य निरस्तीकरण से बचने के लिए हरसंभव प्रयास किए जा रहे हैं।

ऑटोमैटिक सिग्नलिंग प्रणाली के कमीशनिंग कार्य के चलते भावनगर मंडलकी कुछ ट्रेनों के परिचालन में अस्थायी परिवर्तन

(जीएनएस)। यात्रियों को सूचित किया जाता है कि पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद–विरमगाम खंड में चांदलोडिया–आंबली रोड–गोराघुमा–साणंद स्टेशनों के बीच ऑटोमैटिक सिग्नलिंग प्रणाली के कमीशनिंग कार्य के लिए दिनांक 27 एवं 28 दिसंबर, 2025 को नॉन-इंटरलॉकिंग कार्य किया जाएगा।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार इस कार्य के कारण भावनगर रेलवे मंडल से संबंधित कुछ ट्रेनों के परिचालन में अस्थायी परिवर्तन किया गया है, जिसका विवरण निम्नानुसार है:

1.दिनांक 27.12.2025 और 28.12.2025 को गांधीनगर कैपिटल से चलने वाली गाड़ी संख्या 19119 गांधीनगर कैपिटल – वेरावल एक्सप्रेस गांधीनगर कैपिटल – सुरेन्द्रनगर जंक्शन के बीच आंशिक रूप से रद्द रहेगी। अर्थात् यह ट्रेन 27 व 28 दिसंबर, 2025 को सुरेन्द्रगर जं. और वेरावल के बीच संचालित होगी। 2. दिनांक 27.12.2025 और 28.12.2025 को वेरावल से चलने वाली गाड़ी संख्या 19120 वेरावल - गांधीनगर कैपिटल एक्सप्रेस सुरेन्द्रनगर जंक्शन- गांधीनगर कैपिटल के बीच आंशिक रूप से रद्द रहेगी। अर्थात् यह ट्रेन 27 व 28 दिसंबर, 2025 को वेरावल और सुरेन्द्रनगर जं. के बीच संचालित होगी। 3. दिनांक 27.12.2025 को गांधीनगर कैपिटल से चलने वाली गाड़ी संख्या 22957 गांधीनगर कैपिटल-वेरावल निर्धारित मार्ग गांधीनगर कैपिटल-चांदलोडिया बी केबिन-विरमगाम के बजाय परिवर्तित मार्ग गांधीनगर कैपिटल-कलोल-कटोसन रोड-विरमगाम होकर चलेगी। इस कारण यह ट्रेन चांदलोडिया स्टेशन पर नहीं रूकेगी। 4. दिनांक 27.12.2025 को भावनगर टर्मिनस से चलने वाली गाड़ी संख्या 12972 भावनगर – बान्द्रा सुपरफास्ट निर्धारित मार्ग बोटाद-विरमगाम-अहमदाबाद के बजाय परिवर्तित मार्ग बोटाद-गांधीग्राम-साबरमती बी.जी. होकर चलेगी। इस कारण यह ट्रेन राणपुर, लींबडी, जोरावरनगर, सुरेन्द्रनगर गेट और विरमगाम स्टेशनों पर नहीं रूकेगी। 5. दिनांक 27.12.2025 को महुवा से चलने वाली गाड़ी संख्या 22990 महुवा-बान्द्रा सुपरफास्ट निर्धारित मार्ग बोटाद-विरमगाम-अहमदाबाद की बजाय परिवर्तित मार्ग बोटाद-गांधीग्राम-साबरमती बीजी होकर चलेगी। इस कारण यह ट्रेन सुरेन्द्रनगर गेट और विरमगाम स्टेशनों पर नहीं रूकेगी। 6. दिनांक 27.12.2025 को सूरत से चलने वाली गाड़ी संख्या 19255 सूरत-महुवा एक्सप्रेस निर्धारित मार्ग अहमदाबाद-विरमगाम-बोटाद की बजाय परिवर्तित मार्ग अहमदाबाद-साबरमती बीजी-गांधीग्राम-बोटाद होकर चलेगी। इस कारण यह ट्रेन विरमगाम, सुरेन्द्रनगर गेट और लींबडी स्टेशनों पर नहीं रूकेगी। 7. दिनांक 27.12.2025 को बान्द्रा टर्मिनस से चलने वाली गाड़ी संख्या 12971 बान्द्रा-भावनगर सुपरफास्ट निर्धारित मार्ग अहमदाबाद-विरमगाम-बोटाद के बजाय परिवर्तित मार्ग साबरमती बीजी-गांधीग्राम-बोटाद होकर चलेगी। इस कारण यह ट्रेन विरमगाम, सुरेन्द्रनगर गेट, जोरावरनगर, लींबडी और राणपुर स्टेशनों पर नहीं रूकेगी। 8. दिनांक 27.12.2025 को पोरबंदर से चलने वाली गाड़ी संख्या 20937 पोरबंदर-दिल्ली सराय रोहिल्ला निर्धारित मार्ग विरमगाम-चांदलोडिया बी केबिन-मेहसाना की बजाय परिवर्तित मार्ग विरमगाम-मेहसाना-पालनपुर जं. होकर चलेगी। इस कारण यह ट्रेन चांदलोडिया स्टेशन पर नहीं रूकेगी। 9. दिनांक 27.12.2025 को वेरावल से चलने वाली गाड़ी संख्या 22958 वेरावल-गांधीनगर कैपिटल निर्धारित मार्ग विरमगाम-चांदलोडिया बी केबिन-गांधीनगर कैपिटल की बजाय परिवर्तित मार्ग विरमगाम-कटोसन रोड-कलोल-गांधीनगर कैपिटल होकर चलेगी। इस कारण यह ट्रेन चांदलोडिया स्टेशन पर नहीं रूकेगी। 10. दिनांक 28.12.2025 को साबरमती बी केबिन से चलने वाली गाड़ी सख्या 26901 साबरमती बी केबिन-वेरावल वंदे भारत निर्धारित मार्ग साबरमती बी केबिन-चांदलोडिया बी केबिन-विरमगाम की बजाय परिवर्तित मार्ग साबरमती बी केबिन-कलोल-कटोसन रोड-विरमगाम होकर चलेगी। रेल यात्रियों से अनुरोध है कि वे उपरोक्त परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए अपनी यात्रा की योजना बनाएं। ट्रेनों के परिचालन से संबंधित नवीनतम जानकारी के लिए यात्री वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in पर अवलोकन करें, ताकि किसी प्रकार की असुविधा न हो। असुविधा के लिए रेल प्रशासन को खेद है।

कांदिवली एवं वसई रोड स्टेशनों पर फुट ओवर ब्रिज की सीढ़ियों को 29 दिसंबर, 2025 से बंद किए जाने की सूचना

(जीएनएस)। स्टेशन सुधार कार्यों के संबंध में, कांदिवली एवं वसई रोड स्टेशनों पर फुट ओवर ब्रिज (FOB) के कुछ हिस्सों को यात्रियों की आवाजाही के लिए 29 दिसंबर, 2025 से बंद किया जा रहा है। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, कांदिवली स्टेशन पर प्लेटफॉर्म क्रमांक 1 पर स्थित उत्तर दिशा से दूसरे फुट ओवर ब्रिज (FOB) की दक्षिण दिशा की सीढ़ी को यात्रियों के लिए 29 दिसंबर, 2025 से बंद किया जाएगा। हालांकि, इसी फुट ओवर ब्रिज एवं प्लेटफॉर्म के उत्तर दिशा में समान चौड़ाई की एक नव निर्मित सीढ़ी यात्रियों के उपयोग के लिए उपलब्ध रहेगी।

इसी प्रकार, वसई रोड स्टेशन पर प्लेटफॉर्म संख्या 6 एवं 7 पर स्थित उत्तर दिशा से तीसरे फुट ओवर ब्रिज (FOB) की दक्षिण दिशा की सीढ़ी को भी 29 दिसंबर, 2025 से यात्रियों के लिए बंद किया जाएगा। इसके स्थान पर, यात्रियों के उपयोग हेतु एक नव निर्मित सीढ़ी के साथ 60 मीटर लंबा डेक उपलब्ध कराया जाएगा।

यात्रियों से अनुरोध है कि उपरोक्त व्यवस्थाओं पर ध्यान दें। इससे होने वाली असुविधा के लिए खेद है।

पश्चिम रेलवे द्वारा दादर एवं भुसावल,के बीच स्पेशल ट्रेनों के फेरे विस्तारित

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा तथा उनकी यात्रा की बढ़ती मांग को ध्यान में रखते हुए दादर एवं भुसावल के बीच विशेष किराये पर चल रही 02 जोड़ी स्पेशल ट्रेनों के फेरों को विस्तारित किया गया है। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इन ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार है:

ट्रेन संख्या 09049/09050 दादर – भुसावल (साप्ताहिक) स्पेशल

ट्रेन संख्या 09049 दादर – भुसावल स्पेशल को 27 फरवरी, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09050 भुसावल – दादर विशेष को भी 27 फरवरी, 2026 तक विस्तारित किया गया है।

ट्रेन संख्या 09051/09052 दादर – भुसावल (त्रि-साप्ताहिक) स्पेशल

ट्रेन संख्या 09051 दादर – भुसावल विशेष को 28 फरवरी, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09052 भुसावल – दादर विशेष को भी 28 फरवरी, 2026 तक विस्तारित किया गया है।

ट्रेन संख्या 09049 एवं 09051 के विस्तारित फेरों की बुकिंग 28 दिसम्बर, 2025 से सभी पीआरएस काउंटरों एवं आईआरसीटीसी की वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के ठहराव, समय एवं संरचना के संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

बोपल रेलवे फाटक दिनांक 27.12.2025 को रात्रि 22:00 बजे से दिनांक 28.12.2025 को सायं 18:00 बजे तक बंद रहेगा

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के अंतर्गत फाटक संख्या–15 (बोपल रेलवे फाटक), रेलवे किमी 516/04-06, जो ब्लॉक स्टेशन गोराघुमा–आंबली रोड के बीच स्थित है, पर गोराघुमा स्टेशन में नॉन इंटरलॉकिंग कार्य किया जाना है।

उक्त कार्य के कारण बोपल रेलवे फाटक दिनांक 27.12.2025 को रात्रि 22:00 बजे से दिनांक 28.12.2025 को सायं 18:00 बजे तक (कुल 20 घंटे) सड़क यातायात हेतु पूर्णतः बंद रहेगा।

इस अवधि के दौरान सड़क यातायात को फाटक संख्या–16A एवं एस.पी. रिंग रोड (हाईवे) के माध्यम से डायवर्ट किया जाएगा।

रेलवे प्रशासन आम नागरिकों एवं वाहन चालकों से अनुरोध करता है कि असुविधा से बचने हेतु वैकल्पिक मार्गों का उपयोग करें तथा आवश्यक रेल कार्य में सहयोग प्रदान करें।

चांदलोडिया-साणंद स्टेशनों के बीच ऑटोमेटिक सिग्नलिंग कार्य के कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद-विरमगाम सेक्शन में चांदलोडिया-आम्बली रोड-गोराघुमा-साणंद स्टेशनों के बीच ऑटोमैटिक सिग्नलिंग सिस्टम स्थापित कार्य के लिए 27 और 28 दिसंबर 2025 को नॉन इंटरलोकिंग कार्य हेतु ब्लॉक लिया गया है। जिसके कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित रहेंगी। विवरण इस प्रकार है:

निरस्त ट्रेनें

1. दिनांक 27.12.2025 की ट्रेन संख्या 22959 वडोदरा-जामनगर इंटरसिटी एक्सप्रेस रद्द रहेगी।
2. दिनांक 28.12.2025 की ट्रेन संख्या 22960 जामनगर-वडोदरा इंटरसिटी एक्सप्रेस रद्द रहेगी।

आंशिक रूप से रद्द ट्रेनें

1.दिनांक 28.12.2025 और 29.12.2025 की ट्रेन संख्या 19119 गांधीनगर केपिटल-वेरावल इंटरसिटी एक्सप्रेस गांधीनगर केपिटल-सुरेन्द्रनगर के बीच आंशिक रूप से रद्द रहेगी।

2.दिनांक 27.12.2025 और 28.12.2025 की ट्रेन संख्या 19120 वेरावल-गांधीनगर केपिटल इंटरसिटी एक्सप्रेस सुरेन्द्रनगर-गांधीनगर केपिटल के बीच आंशिक रूप से रद्द रहेगी।

परिवर्तित मार्ग से चलने वाली ट्रेनें

1.दिनांक 27.12.2025 की ट्रेन संख्या 22957 गांधीनगर केपिटल-वेरावल सुपरफास्ट एक्सप्रेस अपने निर्धारित मार्ग गांधीनगर केपिटल-चांदलोडिया B-विरमगाम के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया गांधीनगर केपिटल-कलोल-कटोसण रोड-विरमगाम होकर चलेगी। यह ट्रेन चांदलोडिया नहीं जाएगी।

2. दिनांक 27.12.2025 की ट्रेन संख्या 12972 भावनगर-बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस अपने निर्धारित मार्ग बोटाद-विरमगाम-अहमदाबाद के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया बोटाद-गांधीग्राम-साबरमती के रास्ते चलेगी। यह ट्रेन वीरमगाम,सुरेन्द्रनगर गेट,जोरावर नगर,लिंबड़ी और राणपुर स्टेशनों पर नहीं जाएगी।

3. दिनांक 27.12.2025 की ट्रेन संख्या 09037 बांद्रा टर्मिनस-भुज स्पेशल अपने निर्धारित मार्ग अहमदाबाद-वीरमगाम-ध्रांगध्रा-सामाख्याली के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया अहमदाबाद-महेसाणा-भीलड़ी-सामाख्याली के रास्ते चलेगी। यह ट्रेन ध्रांगध्रा स्टेशन पर नहीं जाएगी।

4. दिनांक 27.12.2025 की ट्रेन संख्या 22990 महुवा-बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस अपने निर्धारित मार्ग बोटाद-वीरमगाम-अहमदाबाद के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया बोटाद-गांधीग्राम-साबरमती के रास्ते चलेगी। यह ट्रेन सुरेन्द्रनगर गेट और वीरमगाम स्टेशन पर नहीं जाएगी।

5. दिनांक 27.12.2025 की ट्रेन संख्या 19255 सूरत-महुवा एक्सप्रेस निर्धारित मार्ग अहमदाबाद-वीरमगाम-बोटाद के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया अहमदाबाद-साबरमती-गांधीग्राम-बोटाद के रास्ते चलेगी। यह ट्रेन सुरेन्द्रनगर गेट और वीरमगाम स्टेशन पर नहीं जाएगी।

6. दिनांक 27.12.2025 की ट्रेन संख्या 12971 बांद्रा टर्मिनस-भावनगर एक्सप्रेस निर्धारित मार्ग अहमदाबाद-वीरमगाम-बोटाद के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया अहमदाबाद-साबरमती-गांधीग्राम-बोटाद के रास्ते चलेगी। यह ट्रेन वीरमगाम, सुरेन्द्रनगर गेट, जोरावर नगर, लिंबड़ी और राणपुर स्टेशनों पर नहीं जाएगी।

7. दिनांक 27.12.2025 की ट्रेन संख्या 20937 पोरबंदर-दिल्ली सराय रोहिल्ला एक्सप्रेस निर्धारित मार्ग वीरमगाम-चांदलोडिया बी-महेसाणा के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया वीरमगाम-महेसाणा-पालनपुर के रास्ते चलेगी। यह ट्रेन चांदलोडिया स्टेशन पर नहीं जाएगी।

8. दिनांक 27.12.2025 की ट्रेन संख्या 14311 बरेली-भुज एक्सप्रेस निर्धारित मार्ग महेसाणा-चांदलोडिया बी-वीरमगाम के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया महेसाणा-वीरमगाम-सामाख्याली के रास्ते चलेगी। यह ट्रेन चांदलोडिया स्टेशन पर नहीं जाएगी।

9. दिनांक 27.12.2025 की ट्रेन संख्या 22958 वेरावल-गांधीनगर कैपिटल एक्सप्रेस निर्धारित मार्ग वीरमगाम-चांदलोडिया बी-गांधीनगर कैपिटल के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया वीरमगाम-कटोसन रोड-कलोल-गांधीनगर कैपिटल के रास्ते चलेगी। यह ट्रेन चांदलोडिया स्टेशन पर नहीं जाएगी।

10. दिनांक 28.12.2025 की ट्रेन संख्या 26901 साबरमती-वेरावल वंदेभारत एक्सप्रेस निर्धारित मार्ग साबरमती-चांदलोडिया बी-वीरमगाम के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया साबरमती-कलोल-कटोसन रोड-वीरमगाम के रास्ते चलेगी।

11. दिनांक 28.12.2025 की ट्रेन संख्या 22926 ओखा-अहमदाबाद वंदे भारत एक्सप्रेस निर्धारित मार्ग वीरमगाम-चांदलोडिया-अहमदाबाद के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया वीरमगाम-कटोसन रोड-कलोल-अहमदाबाद के रास्ते चलेगी। यह ट्रेन साणंद और साबरमती (जेल साइड) नहीं जाएगी इस दौरान साबरमती (धरमनगर साइड) स्टेशन पर रुकेगी।

ट्रेनों के ठहराव, समय और संरचना के संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

पश्चिम रेलवे पर क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन,समिति की तिमाही बैठक सम्पन

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे की क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक 26 दिसंबर, 2025 को पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस अवसर पर पश्चिम रेलवे, प्रधान कार्यालय की ई-पत्रिका 'ई-राजहंस' के 61वें अंक का विमोचन महाप्रबंधक महोदय के कर-कमलों से किया गया। इसके साथ ही रेलवे बोर्ड के आदेशानुसार पश्चिम रेलवे में क्षेत्रीय स्तर पर आयोजित हिंदी निबंध, वाक् और हिंदी टिप्पण एवं प्रारुप लेखन प्रतियोगिताओं में विजेता 19 प्रतिभागियों को महाप्रबंधक महोदय के कर-कमलों से नकद पुरस्कार राशि एवं प्रमाण-पत्र से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध कवि एवं राजनेता भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी की जयंती भी मनाई गई। उनके जीवन के संक्षिप्त परिचय से सदस्यों को अवगत कराया गया और उनकी एक प्रसिद्ध कविता 'गीत नया गाता हूं' का गायन द्वारा प्रस्तुतिकरण भी किया गया। राजभाषा बैठक की अध्यक्षता करते हुए पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री गुप्ता ने सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई एवं शुभकामनाएं दी और कहा कि उनका दायित्व है कि वे अपने-अपने कार्यस्थल पर राजभाषा को प्रोत्साहित करें साथ ही उन्होंने अपेक्षा की कि जो कर्मी रेलवे बोर्ड स्तर पर आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं में सहभागिता करेंगे वे भी पश्चिम रेलवे का परचम लहराएं। उन्होंने कहा कि गृह मंत्रालय एवं रेलवे बोर्ड द्वारा

“पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक की अध्यक्षता करते हुए तथा हिंदी निबंध, वाक् और टिप्पण प्रतियोगिताओं में विजेताओं को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान करते हुए।”

राजभाषा के संबंध में जो भी दिशा-निर्देश जारी किए जाते हैं उसका शत-प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित किया जाए।

बैठक के प्रारंभ में पश्चिम रेलवे के मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री विनीत गुप्ता ने समिति के अध्यक्ष एवं पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक, सभी विभागों के प्रमुखों, सभी अपर मंडल रेल प्रबंधक, सभी मुख्य कारखाना प्रबंधक और अन्य अधिकारियों का स्वागत करते हुए पुस्तकों और पुस्तकालयों के महत्व के संबंध में कहा कि संयुक्त राष्ट्र की एजेंसी यूनेस्को ने 23 अप्रैल को 'विश्व पुस्तक और कॉपीराइट दिवस' के रूप में घोषित किया है। इस दिन को मनाने का उद्देश्य पुस्तकों के महत्व को उजागर करना और साहित्य को बढ़ावा देना है। उन्होंने कहा कि सूचना प्रौद्योगिकी के इस दौर में जब सभी प्रकार की सूचनाएं वेबसाइटों के माध्यम से प्रसारित हो रही हैं तब सभी मंडलों/कारखानों/विभागों की वेबसाइट का अद्यतन होना आवश्यक है। जब कभी वेबसाइट पर कोई भी सामग्री अपलोड की जाती है तो यह निश्चित किया जाए कि वह सामग्री दोनों ही भाषाओं में अपलोड की जा रही है। बैठक में अधिकारियों के लिए एक राजभाषा प्रश्न-मंच का आयोजन भी किया गया, जिसमें प्रश्नों के सही उत्तर देने वाले अधिकारियों को पुरस्कृत किया गया। पश्चिम रेलवे में जुलाई से सितंबर-2025 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन में हुई प्रगति संबंधी आंकड़े समिति की सदस्य सचिव श्रीमती सुनीता अहिरे द्वारा प्रस्तुत किए गए।

पश्चिम रेलवे क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की इस बैठक में पश्चिम रेलवे के वरिष्ठ उप महाप्रबंधक श्री कुलदीप कुमार जैन, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (सड़क संरक्षा परियोजनाएं) श्री अमित कुमार मनुवाल, प्रमुख वित्त सलाहकार श्रीमती ऋचा खरे, प्रमुख मुख्य परिचालन प्रबंधक श्री विद्याधर अविनाश मालेगांवकर, प्रमुख मुख्य कार्मिक अधिकारी श्रीमती मंजुला सक्सेना, श्री अमित गुप्ता, प्रमुख मुख्य इंजीनियर, श्री रजनीश कुमार, प्रमुख मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर, मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक, उप महाप्रबंधक (सामान्य) श्री उज्ज्वल देव, सचिव/पश्चिम रेलवे श्री सचिन अशोक शर्मा सहित सभी मंडलों के अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं सभी कारखानों के मुख्य कारखाना प्रबंधक आदि अधिकारी उपस्थित थे। बैठक का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की उपस्थिति में अहमदाबाद में क्रीड़ा भारती के अखिल भारतीय अधिवेशन का शुभारंभ

▸▸ भारत में प्राचीन काल से खेल हमारी संस्कृति और जीवन शैली का एक अहम हिस्सा रहा है : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▸▸ तीन दिवसीय अधिवेशन में देश भर से क्रीड़ा भारती संस्था से जुड़े खिलाड़ी और स्वयंसेवक रहेंगे मौजूद

▸▸ मुख्यमंत्री ने क्रीड़ा ज्योत स्मारिका पुस्तक का विमोचन किया

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :

▸▸ क्रीड़ा भारती खेलों के संरक्षण के लिए खेलकूद के जरिए राष्ट्र निर्माण में योगदान देने वाली संस्था है

▸▸ राज्य सरकार ओलंपिक 2036 रन-अप के हिस्से के रूप में आगामी समय में 5 विश्व स्तरीय खेलों के आयोजन के लिए कटिबद्ध है

▸▸ प्रधानमंत्री का लक्ष्य कि विकसित राष्ट्र के निर्माण के लिए प्रत्येक नागरिक स्वस्थ और फिट रहे, गुजरात में खेल महाकुंभ के जरिए साकार हुआ है

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने शुक्रवार को अहमदाबाद में क्रीड़ा भारती के अखिल भारतीय अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत को राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी मिलने और इन खेलों के आयोजन के लिए अहमदाबाद को चुने जाने के गौरवपूर्ण अवसर पर क्रीड़ा भारती का अधिवेशन अहमदाबाद में आयोजित हुआ है, इससे खेल क्षेत्र को एक नई दिशा मिलेगी।

उन्होंने आगे कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विकास होना चाहिए और इसमें खेलों का भी महत्व है। मुख्यमंत्री ने इस संदर्भ में कहा कि प्रधानमंत्री ने ऐसे उदार भाव के साथ गुजरात में खेल संस्कृति विकसित करने के लिए 2010 से खेल महाकुंभ की शुरुआत की है। खेल महाकुंभ के चलते राज्य के ग्रामीण इलाकों तक खेलों के प्रति रुचि बढ़ी है और खेल महाकुंभ में भाग लेने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

उन्होंने कहा कि 2010 में 16 लाख लोगों की सहभागिता से शुरू हुए खेल महाकुंभ के 2025 के संस्करण में 72 लाख लोगों ने हिस्सा लिया है।

इतना ही नहीं, खेल महाकुंभ की सफलता के चलते गुजरात के लगभग 16 प्रतिभाशाली खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं में राज्य और देश का प्रतिनिधित्व किया है।

मुख्यमंत्री ने प्राचीन ग्रंथों में खेलों के उल्लेख की चर्चा करते हुए कहा कि भारत में प्राचीन काल से ही खेल हमारी संस्कृति और जीवन शैली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। हजारों वर्ष पहले लिखे गए ग्रंथों में भी 64 विद्याओं के माध्यम से व्यक्ति के कौशल विकास की बात की गई है, उनमें से कई विद्याओं के खेलों के साथ जुड़े होने का उल्लेख है।

उन्होंने कहा कि हमारे ग्रंथों में इसका उल्लेख है कि भगवान श्री कृष्ण बचपन में लकड़ी और गेंद का खेल खेलते थे। इसके अलावा, गुरु द्रोणाचार्य के गुरुकुल में कौरवों और पांडवों के बीच तीरंदाजी और गदा युद्ध जैसे खेलों का भी वर्णन है। यजुर्वेद में शारीरिक प्रशिक्षण, अथर्ववेद में स्वस्थ शरीर और समाज को राज्य की रीढ़ बताया गया है। यह सब खेल भावना का प्रतिबिंब है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने क्रीड़ा भारती के पांचवें अधिवेशन में देश भर से आए खिलाड़ियों, प्रशिक्षकों और स्वयंसेवकों का गुजरात की धरती पर स्वागत करते हुए कहा कि क्रीड़ा भारती संस्था भारतीय संस्कृति में उल्लिखित ऐसे अनेक खेलों के संरक्षण के लिए खेलकूद के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे रही है। उन्होने कहा कि क्रीड़ा भारती देश प्रेम के संस्कार सिंचन से केवल खिलाड़ी नहीं, बल्कि भविष्य के नागरिक भी तैयार करने का काम करती है।

उन्होंने आगे कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व और केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह के मार्गदर्शन में राज्य सरकार ओलंपिक के भाग के रूप में आगामी समय में 5 विश्व स्तरीय खेल प्रतियोगिताओं के आयोजन के लिए कटिबद्ध है।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने क्रीड़ा ज्योत स्मारिका पुस्तक का विमोचन किया।

क्रीड़ा भारती के गुजरात प्रदेश अध्यक्ष श्री विवेकभाई पटेल ने स्वागत भाषण में अपने विचार व्यक्त करते हुए सभी का स्वागत किया। इसके अलावा, संस्था के अखिल भारतीय महामंत्री श्री राज जी चौधरी ने अधिवेशन के विषय सहित क्रीड़ा भारती संस्था के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

अधिवेशन में क्रीड़ा भारती के अखिल भारतीय अध्यक्ष श्री गोपाल जी सैनी, मध्य प्रदेश के कैबिनेट मंत्री और क्रीड़ा भारती के कार्यकारी अध्यक्ष श्री चैतन्य जी कश्यप, गुजरात प्रदेश उपाध्यक्ष श्री मिनेषभाई, महानगर अध्यक्ष श्री आनंदभाई, गुजरात प्रदेश मंत्री श्री चिरागभाई और देश भर के क्रीड़ा भारती से जुड़े लोग मौजूद रहे।

अहमदाबाद के श्री कल्कि तीर्थधाम, प्रेरणापीठ में आयोजित तीन दिवसीय अधिवेशन में देश भर से क्रीड़ा भारती संस्था से जुड़े खिलाड़ी और स्वयंसेवक उपस्थित रहेंगे।

राजकोट में जीआईडीसी द्वारा मेडिकल डिवाइस पार्क की महत्वाकांक्षी पहल, गुजरात के तेजी से विकसित हो रहे चिकित्सा क्षेत्र को नई गति

वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस (वीजीआरसी) – कच्छ एवं सौराष्ट्र के आयोजन से वैश्विक निवेश तथा आधुनिक मेडिकल डिवाइस इकोसिस्टम को मिलेगा वेग

(जीएनएस)। गांधीनगर, 26 दिसंबर : गुजरात औद्योगिक विकास निगम (जीआईडीसी) द्वारा राजकोट जिले के नागलपर में एक नया, क्षेत्र-विशिष्ट मेडिकल डिवाइस पार्क स्थापित करने की महत्वाकांक्षी पहल की गई है। इस प्रोजेक्ट का मुख्य उद्देश्य चिकित्सा उपकरण उद्योग के लिए एक एकीकृत एवं व्यापक इकोसिस्टम विकसित करना है; जो अनुसंधान, उत्पादन, गुणवत्ता परीक्षण तथा वैश्विक निर्यात को सुदृढ़ आधार प्रदान करेगा।

नागलपर में मेडिकल डिवाइस पार्क की स्थापना

जीआईडीसी द्वारा प्रस्तावित नागलपुर मेडिकल डिवाइस पार्क लगभग 336 एकड़ क्षेत्र में विकसित किया जाएगा। इस पार्क को 'एंड-टू-एंड' इकोसिस्टम के रूप में डिजाइन किया गया है; जिसमें प्रारंभिक अनुसंधान से लेकर उत्पादन, परीक्षण तथा अंत में अंतरराष्ट्रीय बाजार में निर्यात तक की समग्र प्रक्रिया सरल व कार्यक्षम बनेगी।

स्थानीय लाभ तथा रणनीतिक कनेक्टिविटी

नागलपुर लॉजिस्टिक्स तथा कनेक्टिविटी की दृष्टि से अत्यंत रणनीतिक है। यह क्षेत्र पीपावाव बंदरगाह से लगभग 125 किलोमीटर, कंडला बंदरगाह से 198 किलोमीटर और मुंद्रा बंदरगाह से 243 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। राजकोट अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से सौराष्ट्र अंचल को मुंबई, दिल्ली तथा बेंगलुरू जैसे देश के प्रमुख शहरों के साथ सीधी एयर कनेक्टिविटी प्राप्त है। इसके अतिरिक्त; यह मेडिकल डिवाइस पार्क राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 27 (एनएच-27) से केवल 9 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है; जो अहमदाबाद, जयपुर एवं दिल्ली जैसे महत्वपूर्ण शहरों को जोड़ने वाला प्रमुख राष्ट्रीय राजमार्ग है।

प्लग-एंड-प्ले ढाँचागत सुविधाएँ

उद्योगों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर नागलपुर मेडिकल डिवाइस पार्क में आधुनिक तथा तैयार-उपयोग (प्लग-एंड-प्ले) के लिए ढाँचागत सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएंगी। इनमें दैनिक 3.5 मिलियन लीटर (एमएलडी) क्षमता वाली विश्वसनीय जलापूर्ति व्यवस्था, ठोस कूड़ा प्रबंधन सुविधा तथा सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटपी) शामिल हैं। निर्बाध/निरंतर विद्युत आपूर्ति के लिए 66 केवी सबस्टेशन हेतु भूमि आरक्षित रखी गई है। साथ ही; कार्यक्षम सप्लाई चेन सुनिश्चित करने के लिए कॉमन वेयरहाउस तथा लॉजिस्टिक्स सेंटर का आयोजन किया गया है।

नागलपुर मेडिकल डिवाइस पार्क का विकास भारत के तेजी से विकसित हो रहे मेडिकल डिवाइस उत्पादन क्षेत्र में गुजरात को अग्रसर राज्य के रूप में स्थापित करने की राज्य सरकार की प्रतिबद्धता का प्रतिबिंब है।

वीजीआरसी राजकोट : निवेश का रणनीतिक मंच

राजकोट में आयोजित होने वाली आगामी वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस (वीजीआरसी) – कच्छ एवं सौराष्ट्र नागलपुर स्थित मेडिकल डिवाइस पार्क द्वारा सृजित होने वाले निवेश के विशाल अवसरों को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत करने के लिए एक सशक्त एवं गतिशील प्लेटफॉर्म प्रदान करेगी। ऑर्थोपैडिक तथा सर्जिकल डिवाइस मैन्युफैक्चरिंग के लिए विख्यात राजकोट में आयोजित होने वाली इस कॉन्फ्रेंस के दौरान इंजीनियरिंग, बंदरगाहों तथा लॉजिस्टिक्स और कृषि एवं फूड प्रोसेसिंग जैसे क्षेत्रों में कच्छ-सौराष्ट्र अंचलों की क्षमताओं को विशेष रूप से उजागर किया जाएगा। जनवरी-2026 के दौरान आयोजित होने वाली वीजीआरसी-राजकोट में वैश्विक निवेशकों, उद्योग अग्रणियों और वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों के साथ सीधे संवाद द्वारा रणनीतिक भागीदारियाँ विकसित करने, भूमि आवंटन प्राप्त करने और भारत के मेडिकल डिवाइस बाजार में विशिष्ट पहचान स्थापित करने के स्वर्णिम अवसर उपलब्ध होंगे।

सिख गुरुओं का बलिदान धर्म, मानवता और राष्ट्र रक्षा की अमर मिसाल: योगी आदित्यनाथ

लखनऊ। वीर बाल दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सिख गुरुओं और गुरु गोबिन्द सिंह के साहिबजादों के अद्वितीय बलिदान को नमन करते हुए कहा कि उनका त्याग केवल सिख समाज ही नहीं, बल्कि समूची मानवता और राष्ट्र के लिए प्रेरणास्रोत है। मुख्यमंत्री आवास पर इस अवसर को श्रद्धा, सम्मान और आध्यात्मिक भाव के साथ मनाया गया, जहां साहिबजादों की स्मृति में भव्य कीर्तन समागम का आयोजन किया गया।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि गुरु गोबिन्द सिंह के चारों साहिबजादों—बाबा अजित सिंह, बाबा जुझार सिंह, बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह—का बलिदान भारतीय इतिहास का वह अध्याय है, जो धर्म की रक्षा, अन्याय के प्रतिरोध और मानव मूल्यों की स्थापना का सर्वोच्च उदाहरण प्रस्तुत करता है। उन्होंने कहा कि सिख गुरुओं का जीवन संघर्ष, साधना और शौर्य का ऐसा संगम है, जिसने आने वाली पीढ़ियों को सत्य, साहस और सेवा का मार्ग दिखाया। मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि सिख गुरु परंपरा भक्ति और शक्ति के अनुपम तेज का प्रतीक है। उस कालखंड में आधुनिक साधनों का अभाव था, लेकिन आत्मबल, साधना और संकल्प के सहारे गुरुओं ने न केवल अपने अनुयायियों को जागृत किया, बल्कि समाज को अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध खड़े होने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि जीवन की गति को प्रगति की दिशा में ले जाना ही गुरु परंपरा का संदेश है, जबकि दुर्गति विनाश का मार्ग है।

योगी आदित्यनाथ ने कहा कि वीर बाल दिवस गुरु परंपरा के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का अवसर है। गुरु गोबिन्द सिंह के 550वें प्रकाश पर्व के अवसर पर यह संकल्प लिया गया था कि साहिबजादों के बलिदान को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान और स्मरण दिया जाएगा, ताकि देश की नई पीढ़ी अपने गौरवशाली इतिहास से परिचित हो सके और उससे प्रेरणा ले सके।

मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहल का उल्लेख करते हुए कहा कि उन्होंने देश के सिख समाज की भावनाओं को गहराई से समझते हुए वीर बाल दिवस को राष्ट्रीय स्तर पर मनाने का निर्णय लिया। इससे साहिबजादों के शौर्य और त्याग की गाथा देश के कोने-कोने तक पहुंची है और युवाओं को राष्ट्रभक्ति तथा कर्तव्यबोध का संदेश मिल रहा है। उन्होंने कहा कि सिख गुरुओं और साहिबजादों ने पाखंड, अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध निर्भीक होकर आवाज उठाई।

सप्ताह के दौरान सोना वायदा में 3576 रुपये और चांदी वायदा में 20225 रुपये का बड़ा ऊछाल: क्रूड ऑयल वायदा में 158 रुपये की तेजी

▸▸ कमोडिटी वायदाओं में 370942.83 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 3685177.27 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ साप्ताहिक टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 295057.43 करोड़ रुपये का हुआ साप्ताहिक कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 34492 पॉइंट के स्तर पर

(जीएनएस)। मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर 19 से 24 दिसंबर के सप्ताह के दौरान कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स एंड ऑप्शंस में 4056267.64 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 370942.83 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 3685177.27 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का जनवरी वायदा 34492 पॉइंट के स्तर पर बंद हुआ। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 35387.2 करोड़ रुपये का हुआ।

आलौच्य अवधि के सप्ताह के दौरान कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 295057.43 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना फरवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 134021 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 138676 रुपये के ऑल टाइम हाई और 133555 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 134521 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 3576 रुपये या 2.66 फीसदी के ऊछाल के साथ 138097 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर बंद हुआ। गोल्ड-गिनी जनवरी वायदा सप्ताह के अंत में 3000 रुपये या 2.75 फीसदी की तेजी के साथ 112051 रुपये प्रति 8 ग्राम के भाव पर बंद हुआ। गोल्ड-पेटल जनवरी वायदा 357 रुपये या 2.62 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट सप्ताह के अंत में 13986 रुपये प्रति 1 ग्राम पर आ गया। सोना-मिनी जनवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 132252 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 136888 रुपये के उच्च और 131803 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, सप्ताह के अंत में 3420 रुपये या 2.58 फीसदी की तेजी के संग 136104 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ। गोल्ड-टेन जनवरी वायदा प्रति 10 ग्राम सप्ताह के आरंभ में 134445 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 139993 रुपये के उच्च और 134120 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 134803 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 3640 रुपये या 2.7 फीसदी की मजबूती के साथ 138443 रुपये प्रति 10 ग्राम बंद हुआ।

चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा 202899 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 224430 रुपये और नीचे में 202656 रुपये पर पहुंचकर, 203565 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 20225 रुपये या 9.94 फीसदी की तेजी के संग 223790 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा चांदी-मिनी फरवरी वायदा सप्ताह के अंत में 20046 रुपये या 9.81 फीसदी की बढ़त के साथ 224310 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा 20044 रुपये या 9.81 फीसदी बढ़कर 224313 रुपये प्रति किलो के भाव पर सप्ताह के अंत में बंद हुआ।

मेटल वर्ग में 32024.99 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा जनवरी वायदा सप्ताह के अंत में 50.1 रुपये या 4.46 फीसदी की तेजी के संग 1172.45 रुपये प्रति किलो हुआ। जबकि जस्ता जनवरी वायदा 1.95 रुपये या 0.64 फीसदी की तेजी के संग सप्ताह के अंत में 305.05 रुपये प्रति किलो हुआ। इसके सामने एल्यूमीनियम जनवरी वायदा सप्ताह के अंत में 2.8 रुपये या 0.98 फीसदी बढ़कर 288.15 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। जबकि सीसा जनवरी वायदा 65 पैसे या 0.36 फीसदी चढ़कर 182.35 रुपये प्रति किलो के भाव पर सप्ताह के अंत में बंद हुआ।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 43826.93 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल जनवरी वायदा 5067 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 5303 रुपये और नीचे में 5026 रुपये पर पहुंचकर, सप्ताह के अंत में 158 रुपये या 3.09 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 5272 रुपये प्रति बैरल पर आ गया। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी जनवरी वायदा सप्ताह के अंत में 156 रुपये या 3.05 फीसदी की मजबूती के साथ 5272 रुपये प्रति बैरल बंद हुआ। इनके अलावा नैचुरल गैस जनवरी वायदा 333.2 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 357.9 रुपये और नीचे में 314 रुपये पर पहुंचकर, 335.9 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 3.2 रुपये या 0.95 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 339.1 रुपये प्रति एमएमबीटीयू पर आ गया। जबकि नैचुरल गैस-मिनी जनवरी वायदा सप्ताह के अंत में 3.1 रुपये या 0.92 फीसदी की तेजी के संग 339.2 रुपये प्रति एमएमबीटीयू हुआ।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल जनवरी वायदा 961 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के अंत में 1.5 रुपये या 0.16 फीसदी बढ़कर 956.4 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर आलौच्य अवधि के सप्ताह के दौरान सोना के विभिन्न अनुबंधों में 128990.24 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 166067.20 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 26823.06 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 1649.17 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 124.27 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 3428.49 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 4206.19 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 39549.93 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

ओपन इंटरेस्ट सप्ताह के अंत में सोना के वायदाओं में 14550 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 36631 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 10251 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 158817 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 17558 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 12566 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 30455 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 54931 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 18698 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 23146 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स जनवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 33183 पॉइंट पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 34941 के उच्च और 33111 के नीचले स्तर को छूकर, सप्ताह के अंत में 1216 पॉइंट बढ़कर 34492 पॉइंट के स्तर पर बंद हुआ।

मण्डल रेल प्रबंधक अहमदाबाद द्वारा साबरमती कलोल-महेसाणा-पालनपुर सेक्शन का निरीक्षण

(जीएनएस)। गुजरात में रेल संरक्षा एवं विकास की दिशा में निरंतर अग्रसर भारतीय रेलवे द्वारा रेल संरक्षा तथा आधारभूत ढांचे के सुदृढ़ीकरण के लिए लगातार कार्य किए जा रहे हैं। इसी क्रम में दिनांक 26.12.2025 को पश्चिम रेलवे, अहमदाबाद मंडल के मंडल रेल प्रबंधक (DRM) श्री वेद प्रकाश ने वरिष्ठ रेल अधिकारियों के साथ साबरमती–कलोल–महेसाणा–पालनपुर रेल खंड का विस्तृत निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान साबरमती से पालनपुर के बीच रेलवे ट्रैक, लेवल क्रॉसिंग, छोटे एवं प्रमुख पुलों, पॉइंट्स एवं क्रॉसिंग, सेक्शन के कर्व्स, क्रॉसिंग तथा विभिन्न संरक्षा मानकों की गहन समीक्षा की गई और संबंधित अधिकारियों के साथ संरक्षा से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई।

निरीक्षण के दौरान साबरमती–कलोल खंड के बीच स्थित लेवल क्रॉसिंग संख्या 240 (SPL) पर चल रहे मरम्मत एवं संरक्षा कार्यों की प्रगति का जायजा लिया गया। साथ ही कलोल रेलवे स्टेशन पर अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत प्रगति पर चल रहे पुनर्विकास कार्यों का निरीक्षण किया गया। डांगरवा यार्ड में पॉइंट्स एवं क्रॉसिंग (पीएंडसी) तथा स्विच एक्सपेंशन जॉइंट्स (एसईजे) का निरीक्षण किया गया तथा कर्व संख्या 116 की संरक्षा जांच की गई। इसके अतिरिक्त प्रमुख पुल संख्या 965 DN (कॉम्पोज़िट गर्डर) का निरीक्षण किया गया। खारी नदी पर कार्यरत पी-वे गैंग का निरीक्षण करते हुए मंडल रेल प्रबंधक ने गैंगमैनों से संवाद किया और उपयोग किए जा रहे सेफ्टी उपकरणों की जानकारी ली।

महेसाणा स्टेशन के निरीक्षण के दौरान आरपीएफ पोस्ट की व्यवस्थाओं की समीक्षा की गई तथा रेलवे हेल्थ यूनिट का निरीक्षण कर उपलब्ध चिकित्सीय सुविधाओं का जायजा लिया गया। इसके साथ ही रेलवे कॉलोनी की सुविधाओं का अवलोकन किया गया और स्टेशन परिसर में नव विकसित पार्क का भी निरीक्षण किया गया। उंझा में रोड अंडर ब्रिज का निरीक्षण कर संरक्षा एवं यात्री सुविधाओं का आकलन किया गया, साथ ही सिद्धपुर में रेलवे कॉलोनी का निरीक्षण किया गया। कलोल, महेसाणा एवं पालनपुर रेलवे स्टेशनों पर मास्टर केबिन, बुकिंग काउंटर, फुट ओवर ब्रिज, प्लेटफॉर्म, वेटिंग रूम सहित विभिन्न आधारभूत संरचना कार्यों का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान मंडल रेल प्रबंधक ने अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत विकसित किए जा रहे महेसाणा, पालनपुर एवं साबरमती स्टेशनों के पुनर्विकास कार्यों की प्रगति का भी जायजा लिया।

हेबतपुर रेलवे फाटक दिनांक 27.12.2025 को रात्रि 22:00 बजे से दिनांक 28.12.2025 को सायं 18:00 बजे तक बंद रहेगा

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के अंतर्गत फाटक संख्या–11 (हेबतपुर रेलवे फाटक), रेलवे किमी 511/02-04, जो ब्लॉक स्टेशन आंबली रोड–चांदलोडिया के बीच स्थित है, पर आंबली रोड एवं चांदलोडिया स्टेशनों पर नॉन इंटरलॉकिंग कार्य किया जाना है।

उक्त कार्य के कारण हेबतपुर रेलवे फाटक दिनांक 27.12.2025 को रात्रि 22:00 बजे से दिनांक 28.12.2025 को सायं 18:00 बजे तक (कुल 20 घंटे) यातायात हेतु पूर्णतः बंद रहेगा।

इस अवधि के दौरान सड़क यातायात को शोला ब्रिज, शिलज ब्रिज एवं सिम्स ब्रिज के माध्यम से डायवर्ट किया जाएगा। रेलवे प्रशासन आम नागरिकों एवं वाहन चालकों से अनुरोध करता है कि वे असुविधा से बचने हेतु वैकल्पिक मार्गों का उपयोग करें तथा इस आवश्यक रेल कार्य में सहयोग प्रदान करें।

इंजीनियरिंग कार्य के चलते कानालुस पोरबंदर और पोरबंदर–कानालुस लोकल ट्रेनों का संचालन 25 जनवरी तक गोप जाम स्टेशन से होगा

(जीएनएस)। राजकोट मंडल के कानालुस स्टेशन पर प्लेटफॉर्म मरम्मत कार्य की वजह से 25 जनवरी, 2026 तक कानालुस–पोरबंदर और पोरबंदर–कानालुस लोकल ट्रेनों का परिचालन आंशिक रूप से प्रभावित रहेगा। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार, प्रभावित ट्रेनों का विवरण इस प्रकार हैः

आंशिक रूप से प्रभावित ट्रेनें

ट्रेन संख्या 59206 पोरबंदर–कानालुस लोकल

यह ट्रेन 31 दिसंबर, 2025 से 25 जनवरी, 2026 तक पोरबंदर से प्रस्थान कर गोपजाम जाएगी तथा गोपजाम–कानालुस खंड के बीच आंशिक रूप से रद्द रहेगी।

ट्रेन संख्या 59205 कानालुस–पोरबंदर लोकल

यह ट्रेन 31 दिसंबर, 2025 से 25 जनवरी, 2026 तक कानालुस की बजाय गोपजाम स्टेशन से चलेगी और कानालुस-गोपजाम खंड के बीच आंशिक रूप से रद्द रहेगी।

यात्रियों से निवेदन

रेल यात्रियों से अनुरोध है कि वे उपरोक्त परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए अपनी यात्रा की योजना बनाएं। ट्रेनों के परिचालन से संबंधित नवीनतम जानकारी के लिए यात्री वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in पर अवलोकन करें, ताकि किसी प्रकार की असुविधा न हो।

कोल इंडिया को मिला नया नेतृत्व ढांचा, बी. साईराम को सौंपी गई सीईओ की जिम्मेदारी

(जीएनएस)। नई दिल्ली। देश की सबसे बड़ी सार्वजनिक क्षेत्र की कोयला उत्पादक कंपनी कोल इंडिया लिमिटेड में शीर्ष स्तर पर अहम प्रशासनिक फैसला लिया गया है। कंपनी के निदेशक मंडल ने चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक बी. साईराम को मुख्य कार्यपालक अधिकारी यानी सीईओ नियुक्त करने का निर्णय लिया है। यह फैसला शुक्रवार को आयोजित बोर्ड बैठक में सर्वसम्मति से लिया गया, जिसके बाद कंपनी के प्रबंधन ढांचे में एक महत्वपूर्ण बदलाव सामने आया है। कोल इंडिया की ओर से जारी जानकारी के मुताबिक, अब बी. साईराम सीएमडी और सीईओ—दोनों भूमिकाओं की जिम्मेदारी एक साथ निभाएंगे। कंपनी का मानना है कि इस दोहरी जिम्मेदारी से निर्णय लेने की प्रक्रिया अधिक तेज और प्रभावी होगी तथा शीर्ष स्तर पर समन्वय बेहतर तरीके से स्थापित किया जा सकेगा। प्रबंधन को उम्मीद है कि इससे रणनीतिक योजनाओं के क्रियान्वयन में भी मजबूती आएगी। यह नियुक्ति ऐसे समय में की गई है, जब कोल इंडिया वित्त वर्ष 2025-26 के लिए महत्वाकांक्षी उत्पादन लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में काम कर रही है।